

अनिता यादव

पिता	–	स्वर्गीय श्री रामकृष्ण यादव
माता	–	श्रीमती उर्मिला देवी
भाई	–	आचार्य नरेन्द्र शास्त्री (साहित्यकार) बेस्ट सेलर उपन्यास 'यदुराज' के लेखक
पति	–	श्री नितिन यादव
शिक्षा	–	बी. एस. टी. सी., बी. एड., एम. ए.
जन्म स्थान	–	ग्राम–पदमाडा खुर्द
तहसील	–	मुंडावर
जिला	–	अलवर
पिन कोड	–	301427
स्थाई पता	–	ग्राम–कांकरा बर्डौद तहसील–बहरोड़
मोबाईल नंबर	–	9588242046

लेखिका विभिन समाचार पत्रों में समसामयिक विषयों पर लेखन कार्य करती रही हैं।

Madhushala Prakashan Pvt. Ltd.
PUBLISH YOUR DREAM BOOK
ISO 9001:2015 CERTIFIED PRAKASHAN
madhushalaprakashan@gmail.com
www.madhushalaprakashan.com
AVAILABLE AT Flipkart Google Play amazon kindle

ISBN:978-81-971964-1-6
MRP:₹150/-

नरेन्द्र सोमनाथ महालय का एक अप्रतिम योद्धा उपन्यास

अनिता यादव

उपन्यास



नरेन्द्र

सोमनाथ महालय का एक अप्रतिम योद्धा

अनिता यादव

नरेन्द्र

सोमनाथ महालय का एक अप्रतिम योद्धा

अनिता यादव

मधुशाला प्रकाशन प्रा. लि.
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित
भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

नरेन्द्र : सोमनाथ महालय का एक अप्रतिम योद्धा

NARENDRA : SOMNATH MAHALAY KA EK
APRATIM YODDHA

विधा : उपन्यास

प्रकाशक

मधुशाला प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड

राजकीय अस्पताल के पास, विकास नगर,

भरतपुर, राजस्थान – 321001

Email : madhushalaprakashan@gmail.com

Website : www.madhushalaprakashan.com

Contact us : 7665880322, 9610193625

मूल्य	:	150 रुपये
पृष्ठ	:	98
प्रथम संस्करण	:	2024
ISBN	:	978-81-971964-1-6
टंकण एवं पृष्ठ सज्जा	:	मधुशाला प्रकाशन प्रा. लि.
मुद्रक	:	मधुशाला प्रकाशन प्रा. लि.

समर्पण



मेरी यह प्रथम कृति

"नरेन्द्र सोमनाथ महालय का एक अप्रतिम योद्धा"

मेरे पिता स्वर्गीय श्री रामकृष्ण यादव

को समर्पित है।



तार्किकता और तथ्यों की पुष्टि पर आधारित है यह उपन्यास

सोमनाथ महालय पर घटनाक्रम और तथ्यों के साथ बहुत कम साहित्य मिलता है। इस पुस्तक का पहला पाठक बनते समय मुझे अपार खुशी है की बहन अनिता यादव ने इस उपन्यास को पूर्ण रोचकता के साथ इस अंदाज में प्रस्तुत किया है मानो लगता है सोमनाथ महालय में जो योद्धा तत्कालीन समय में हो वो हम ही हैं। पाठक इसकी जीवंतता में इतना खो जाता है उसे वास्तविकता और लेखनी का भान ही नहीं रहता। बहन अनिता यादव की मेहनत का परिणाम है ऐसा अनमोल उपन्यास जो हिंदी साहित्य में कालजयी साबित होगा जो हमारे सामने पूर्ण तथ्यों और तार्किकता के साथ है। एक लेखक को जो करना चाहिए वो ही अनिता यादव ने इस उपन्यास 'नरेन्द्र : सोमनाथ महालय का एक अप्रतिम योद्धा' में किया उसने पूर्व के साहित्यकारों जिन्होंने सोमनाथ पर लिखा उनके पात्रों को धत्ता नहीं बताकर विषयभंग का दोष नहीं लिया अपितु उनको और रोचकता तथा सजीवता के साथ प्रस्तुत किया। आपको इस उपन्यास के लिए ढ़ेरों बधाई व शुभकामनाएँ आपकी लेखनी हमेशा हिंदी साहित्य के लिए अमूल्य थाती रूपी साहित्य लिखती रहे।

आचार्य नरेन्द्र शास्त्री

बेस्टसेलर उपन्यास यदुराज के लेखक


Madhushala Prakashan
PUBLISH YOUR DREAM BOOK
ISO 9001:2015 CERTIFIED PRAKASHAN
BUY NOW
यदुराज
+91 7665880322
www.madhushalaprakashan.com
madhushalaprakashan@gmail.com

पुस्तक के बारे में

भारत देश की प्राचीन काल में समृद्धि का और उसके गौरव का आधार यहाँ के मंदिर हुआ करते थे। सोमनाथ ज्योर्तिलिंग जिसकी स्थापना स्वयं चन्द्र भगवान ने की थी भारत के बारह प्रमुख ज्योतिर्लिंगों में स्थान है। कुछ धर्मविरोधी ताकते दूसरे राष्ट्र की संस्कृति, देवमहिमा और वहा के गौरव को नष्ट करना चाहते है ये कोई नई बात नही है ऐसा ही सोमनाथ महालय में हुआ। मंदिर के निर्माण के बाद सन 1025 ई० से सन 1701 तक सोमनाथ मंदिर पर 6 बार आक्रमण करके नष्ट करने का प्रयास किया। पहला आक्रमण महमूद गजनवी ने सन 1025 ई० में किया और यहाँ की अतुलित धन सम्पदा को लुटा। इतिहासकार कहते है वह यहाँ से 20 हजार करोड़ दीनार जितना धन लूट कर ले गया था। दूसरा आक्रमण अल्लाउदीन खिलजी के सेनापति नुसरत खान ने सन 1297 ई० में किया। तीसरा आक्रमण गुजराती शासक मुजफ्फर शाह ने तथा चौथा आक्रमण अहमद शाह ने तथा दो बार आक्रमण औरंगजेब ने करके इसको ध्वस्त करने का प्रयास किया किंतु 6 बार आक्रमण के बाद भी यह मंदिर अपने पूरे गौरव के साथ खड़ा है और करोड़ो भक्तो की आस्था में रत्तीभर भी अंतर नहीं आया। यह उपन्यास 'नरेन्द्र सोमनाथ महालय का एक विस्मृत योद्धा` लिखते समय मैने मूल उद्देश्य से ना भटक कर केवल यही पाठको को दिखाना सार्थक समझा की वे एक योद्धा जिसका इतिहास में बहुत जिक्र होना चाहिए था उसको चंद अक्षरों में समेट कर इतिश्री कर दी या फिर कहे भुला ही दिया। मेरा उद्देश्य उसके गुण गौरव को प्रकाश में लाना है। सोमनाथ महालय के लिए वैसे तो कई हजारों ने अपने प्राणों की आहुति दी है लेकिन इनमें सबसे ज्यादा योगदान नरेन्द्र का है क्योंकि युद्ध लड़ने के अलावा अंतिम समय में जब वह अकेला युद्ध लड़ रहा था तब उसने मृत्यु का आलिंगन करने से पहले महमूद गजनवी को उसका एक हाथ उखाड़कर उसको ऐसी सौगात

दी थी जिसे वह ताउम्र नही भुला था और सोमनाथ आक्रमण के बाद महमूद गजनवी किसी सैन्य अभियान में भी नही गया। लेकिन नरेन्द्र द्वारा हाथ उखाड़ने वाली इस बात का जिक्र करते समय शायद अरबी साहित्यकार अपने देश की गरिमा को कमतर तो नहीं दिखाना चाहते होंगे तत्कालीन साहित्य में विवरण नहीं मिलता। इस उपन्यास का नायक नरेन्द्र है तो उपन्यास की गरिमा को बनाए रखने के लिए हमने मंदिर को लूटकर वापिस लौटते समय महमूद गजनवी को और उसके मार्ग का वर्णन करना उचित नहीं समझा तथा मंदिर के बनने से आक्रमण तक की कहानी तथा किसका क्या योगदान रहा इस पर प्रकाश डाला है। उपन्यास ऐतिहासिक है इस लिहाज से हमने तथ्यों और घटनाओं को पूर्ण सटीकता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है फिर भी रोचकता लाने के लिए एकाध काल्पनिक पात्र भी सम्मिलित किए है।

लेखिका की क़लम से

आदरणीय पाठको व विज जनों किसी भी लेखक का साहित्य में स्थान उसकी लेखनी के अलावा पाठक तय करते है । 'नरेन्द्र सोमनाथ महालय का एक विस्मृत योद्धा' इस उपन्यास को लिखते समय मैने ऐतिहासिक तथ्यों, स्थान व पात्रों के संदर्भ में पूर्ण सावधानी बरती है फिर भी मानवीय स्वभाववश अगर कुछ त्रुटी शेष रह जाती है जो मेरी इस भूल को क्षमा करके सूचित करे ताकि आगामी संस्करण में उसे संशोधित किया जा सके । उम्मीद है यह उपन्यास आपको बेहद पसंद आएगा और आप अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित होंगे तथा एक सवाल जो कभी आपके मन में भी कौंधा होगा की इतने हिंदुओं और इतने बलशाली राजाओं के होते हुए सुदूर देश से एक आक्रमणकारी कैसे इस देश की संपदा को लूट कर ले गया, इसका उत्तर भी आपको इसमें अवश्य मिलेगा । आप सभी विज पाठको को शुभकामनाओं सहित नमस्कार ।

- अनिता यादव

आभार

भगवान महादेव की कृपा, पिता स्वर्गीय श्री रामकृष्ण यादव, माता श्रीमती उर्मिला देवी, इस उपन्यास के पहले पाठक तथा हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार भाई नरेन्द्र शास्त्री (यदुराज उपन्यास), साहित्यकार भाभी ज्योति यादव (काश्वी पुस्तक), दादा श्रीमान रामदत्त यादव, दादी श्रीमती विमला देवी, पति नितिन यादव, पुत्र हेमांश, ससुर श्री रामसिंह यादव, सास श्रीमती सुमन यादव, चाचा श्रीमान धर्मेन्द्र यादव, मौसी कांता देवी, बहन सरिता यादव, प्रियंका, पूनम, नुपुर यादव, पिंकी यादव, ताऊ रोहिताश्व यादव, भुवा जी हेमलता यादव आप सबने मुझे सदैव लिखने के लिए प्रेरित किया तथा गुरुदेव श्री लक्खीराम शर्मा, विजय सर, मुरलीधर मीणा, प्रेमप्रकाश शर्मा, लीलाराम बसवाला, आप सबका आशीर्वाद व मार्गदर्शन मेरे काम आया तथा मैं सोमनाथ महालय तथा उसके आक्रमण जैसे विषय पर उपन्यास लिख सकी। इस पुस्तक को प्रकाशित कर रही मधुशाला प्रकाशन तथा पाठको का आभार जो आपका स्नेह इसे विशेष बना रहा है।

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	अध्याय	पृ. सं.
1.	प्रभास पट्टन	13-15
2.	महालय का वर्णन	16-18
3.	प्रभास पाटन पर अमीर के आक्रमण से पूर्व बनने का क्रम	19-21
4.	लकुलीश मत व गंग सर्वज्ञ	22-23
5.	यामीन अब्दुल कासिम महमूद का गजनी का अमीर बनना और भारत पर सोमनाथ से पूर्व उसके आक्रमण	24-29
6.	अलबरूनी का महमूद के दरबार में आना	30
7.	नरेन्द्र	31-33
8.	दरबार में	34-35
9.	निसिका का प्रेम	36-38
10.	कामरान का आतंक	39-42
11.	जीत के बाद	43-45
12.	अलबरूनी की भारत यात्रा	46-48
13.	फाल्गुन बदी त्रयोदशी	49-52
14.	चौला का नृत्य	53-54
15.	प्रेम की अजस्र वाहिनी	55-56
16.	निर्माल्य	57-58
17.	छद्मवेशी सुल्तान	59-60
18.	महालय में तैयारी	61-63

19.	अमीर महमूद का गजनवी दरबार	64-65
20.	महमूद गजनवी का आक्रमण के लिए प्रस्थान	66-67
21.	विष्णुभद्र	68-71
22.	घोघाबापा	72-75
23.	गंगा	76-77
24.	मार्ग में	78-79
25.	युद्ध की पूर्व तैयारी	80-81
26.	अघोर तांत्रिक क्रियाएं	82-83
27.	युद्ध से पूर्व	84
28.	आखिरी पैग़ाम	85-86
29.	पहले दिन का युद्ध	87-88
30.	दूसरे दिन की युद्ध नीति	89-90
31.	दूसरे दिन का युद्ध	91-93
32.	अंतिम दिन का युद्ध	94-96
33.	युद्ध के बाद	97-98

प्रभास पट्टन

सूर्य नारायण अस्ताचल को जा रहा था, प्रभास पाटन के मजबूत कोटो पर पड़ता सूर्य का मद्धिम प्रकाश परकोटे को काला स्याह बना रहा था। रोशनी से शहर जगमगा उठा था। शहर के मुख्य मार्गो के समाप्त होते ही भव्य सोमनाथ का मंदिर 3 तरफ के सम्पूर्ण कोटे के साथ जिसकी दीवारे तकरीबन 15 फीट ऊंची तथा 5 से 7 हाथ चौड़ी थी जिन पर 4-5 सैनिक आगे पीछे एक साथ सुगमता से खड़े हो सकते थे। तथा चौथी तरफ का परकोटा थोड़ा नीचा था, उसकी दीवारों को इस प्रकार से बनाया गया था की जमीन के रास्ते से शत्रु का वहा सीधे तौर पर पहुंचना मुश्किल हो, समुद्री डाकुओं के खतरे से बचाने के लिए परकोटे की दीवार के साथ साथ एक 15-20 फीट चौड़ी तथा तकरीबन 30 फीट गहरी खाई बनाई गई थी जिसमे आवश्यकता पड़ने पर समुद्री जल भर दिया जाता था।

परकोटे के अंदर स्थित सोमनाथ महालय था। अलौकिक शोभा से परिपूर्ण। परकोटे के अंदर मंदिर का परिसर तकरीबन 2 किलोमीटर लंबा और 1 किलोमीटर चौड़ा फैला हुआ था। मंदिर का निर्माण करते समय परिसर का निर्माण इस आधार पर किया गया था की वहा सहस्त्रों की संख्या में मनुष्य एक साथ दर्शन का लाभ उठा सके। सोमनाथ महालय के तत्कालीन समय के प्राप्त विवरणों के अनुसार दस सहस्त्र भक्तजन एक साथ खड़े होकर आंगन जो की ज्योतिर्लिंग के ठीक सामने था जिसको सभामंडप भी कहा जाता था। सभामंडप में खड़े होकर ज्योतिर्लिंग दर्शन का नित्य लाभ उठाया करते थे।

आज महालय के सभामंडप में तिल जितनी जगह भी रिक्त नही थी, फाल्गुन बदी त्रयोदशी (महाशिवरात्रि) को तथा श्रावण बदी त्रयोदशी को विशाल मेला आयोजित होता था। जिसमे दिग--दिगांतर के व्यापारी अपना व्यापार करने आते थे। महालय से थोड़ी दूर वेरावल बंदरगाह था जहा पोतो पर माल उतरता और व्यापारी लोग कुछ समुद्री रास्तों से आकर,

कुछ स्थलीय मार्गो से आकर अपने देश का माल बेचकर दूसरे देश का मार्ग अपने देश में ले जाते थे।

यहाँ प्रमुख रूप से कंधार, बुखारा, ख्वारिज्म, हेरात, बगदाद इस्तानताबुल, सिलोन,इत्यादि देशों के व्यापारी अपने वाणिज्य व्यापार को बढ़ाने के लिए आते थे।

उनसे लिए जाने वाले चुंगी और डाण कर से राज्य के खजाने में अप्रत्याशित वृद्धि होती थी। हाट बाजार में लगने वाली दुकानों के स्थानिक कर से मंदिर की सुरक्षा में मुस्तैद सैनिकों के वेतन व उनके रहन सहन का खर्च वसूल हो जाता था। सुरक्षा की दृष्टि से मंदिर में 3 चौकिया बनाई गई थी जिनपर तकरीबन 700-800 प्रहरी नित्यप्रति बारी- बारी चाक- चौकसी किया करते थे।

आज मेले की व्यवस्था और मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखकर सैनिकों की संख्या को तीन गुना बढ़ा दिया था। सभा मंडप में तिल रखने जितनी जगह भी खाली नही थी। दर्शनार्थी श्रद्धालुओं को प्रहरी दर्शन करते ही तुरंत हटने का आदेश देते थे।

आप्त दर्शन श्रद्धालुओं के स्थान पर नव श्रद्धालु आकर ज्योतिर्लिंग के दर्शन का लाभ उठा रहे थे। अचानक भीड़ में 2 पंक्तियों जितनी जगह खाली करवा ली गई। पाटन अधिपति चालुक्य महाराज भीमदेव अपने सेनापति बालुकराय, मंत्री विमल, दामोदर मेहता सहित दर्शन को आए। शत सहस्त्र दीपकों की मालाओं से मंदिर का सभा मंडप जगमगा उठा। भीड़ को चीरते हुए एक बलिष्ठ युवक आगे आया और ज्योतिर्लिंग को दंडवत प्रणाम किया। ज्योतिर्लिंग को दंडवत प्रणाम करने के बाद गंग सर्वज्ञ ने युवक को प्रसाद दिया। प्रसाद लेकर युवक तांडव आरती में शामिल हो गया। तांडव आरती का प्रचलन तत्कालीन समय में सोमनाथ महालय में प्रचलित था जिसमे पुजारी मुख्य अवसर पर एक पाव पर खड़े होकर पूजा किया करता था। आरती खत्म होने के बाद युवक ने ना तो भीमदेव व ना उसके किसी साथी की तरफ देखा और ना ही वहा खड़े किसी नृपति की तरफ देखा। युवक द्वारा महाराजा भीमदेव को ना देखना

और उन्हें अभिवादन ना करना उनके आत्मसम्मान को कुछ नागवार गुजरा। युवक ने अपने अंतः वस्त्रो में से एक पोटली निकालकर गंग सर्वज्ञ को दी और कहा महाराज प्रवर्सन इस बार स्वयं नही आ सके इसलिए देव के श्रीचरणों में छोटी सी भेंट भेजी है। कोई बात नही नरेन्द्र ! तुम महाराज को मेरा आशिर्वाद कहना, कहना, भगवान सोमनाथ उन पर सदैव कृपा बनाए रखे।

* * *

महालय का वर्णन

सोमनाथ महालय विशद और विस्तृत था । सोमनाथ महालय परिसर के बाहर परकोटे में सैकड़ों मंदिर बने हुए थे जो विभिन्न नृपतियो, महाजनों व सामंतो ने बनवाए थे। सोमनाथ महालय में शिवलिंग की लंबाई तकरीबन 10 हाथ थी जिस पर सप्त नदियों के जल से अभिषिक्त करके सुवासित कर्पूर चंदन आदि का निर्माल्य किया जाता था। ज्योतिर्लिंग के ठीक सामने नंदी महाराज की भव्य प्रतिमा थी। जिसका निर्माण चालुक्य राजाओं ने करवाया था । तकरीबन 20 टन वजनी भव्य प्रतिमा देखकर लगता था कैलाश वासी शिव के समक्ष ही नंदी दंडवत प्रणाम कर रहा हो। मंदिर की आधार से शिखर तक लम्बाई 155 फीट थी। मंदिर का कलश 25 फीट ऊंचा तथा इतना ही चौड़ा था। जिस पर 27 फीट ऊंची महालय की विश्व धर्म पताका सदैव फहराती थी। कलश तकरीबन 10 टन वजनी था जिसके गुंबदों की सोने से मंढा गया था। मंदिर में छोटी छोटी पंक्तियों में धीपधारो का निर्माण किया गया था जिसमे शत सहस्त्र दीपक एक साथ जगमग करके जल उठते थे।

शिवालय परिसर में सैकड़ों स्तंभ खड़े थे जिन पर पच्चीकारी और सोने का काम बहुत बारीकी से हुआ था। सूर्य नारायण की सुनहरी किरणे जब इस स्वर्ण जड़ित स्तंभों पर पड़ती थी तो उसके प्रकाश से सहस्त्रों सूर्य की दीप्ति भी फिंकी पड़ जाती थी। वे सुनहरे स्तंभ सूर्य के सुनहरे प्रकाश में जगमगा उठते थे । देखने वाले यात्रियों को भान होता था मानो वे किसी महालय में ना होकर स्वर्ण स्तंभों की एक खान में हो, और यह स्तंभों का भव्य मंदिर स्तंभों का नगर प्रतीत होता था।

गर्भगृह की दीवारों के अंदर सोने, चांदी आदि अष्ट धातुओं (पारा, जस्ता को छोड़कर) का काम किया गया था जिसमे सोने चांदी की मात्रा ज्यादा थी । इसके उपरांत दीवारों पर शिव पार्वती के बारीक चित्र हेम जड़ित किया हुआ था । गर्भगृह में अखंड घृत युक्त दीपक तथा चंदन कस्तूरी युक्त धूप आदि अखंड रूप से जलते रहते थे। पुजारी नित्य रूप से

अखंड रुद्री पाठ किया करते थे । महालय की सेवार्थ विभिन्न प्रदेशों के तकरीबन 2000 वेदपाठी निष्णात ब्राह्मण नित्यदेवा में महालय कोट के अंदर रहते थे । विभिन्न प्रकार के नृत्य व अभिनय में पारंगत सम्पूर्ण आर्यवर्त की चारो दिशाओं की कुशल नृत्यांगना कोट के अंदर ही रहा करती थी । सुबह से लेकर शाम तक शिवालय में विभिन्न प्रकार के शास्त्रीय नृत्य का आयोजन होता रहता था । स्वर भंग, ताल भंग, मुद्रा भंग होते ही नृत्यांगना को महालय से अवकाश दे दिया जाता था । गति से विच्छिन नृत्य की महालय में कोई आवश्यकता नहीं थी । 500 से अधिक नापित (नाई) महालय की सेवा में नियुक्त किए गए थे । महालय में प्रवेश करते ही दीवारों के दोनों तरफ इंद्र देव का एरावत सहित चित्रण किया गया था जिसमे इन्द्र को पूजा करते हुए जाते बताया गया है । महालय की दीवारों पर ब्रह्मा और विष्णु को लिंग की अपरिमित अपरिमेय लंबाई-चौड़ाई आदि का आदि और अंत ज्ञात करने की दृष्टि से जाते हुए दिखाए जाने का भव्य चित्रण किया हुआ था ।

अंत कोट में प्रवेश करते ही बाई ओर गणपति का भव्य मंदिर बना हुआ था जिसके बारे में कहा जाता है इसका निर्माण महान राजा ययाति ने करवाया था । मंदिर के दोनों तरफ चम्पा, कनेर, गुलाब, कुमुदनी, मधु मालती फूलो की फुलवरिया बना रखी थी । जिसमे हिरण्या और कपिला नदी के जल से सींचन किया जाता था । महालय के दाई ओर त्रिपुरा सुंदरी का मंदिर था जिसमे वाममार्गीय क्रियाएं हुआ करती थी ।

महालय के बाई ओर गंग सर्वज्ञ का निवास स्थान था ।

परिक्रमा पथ के बीच से एक छोटा सा रास्ता एक तहखाने की तरफ जाता था जिसमे कापालिक और कालमुखे रहा करते थे ।

अंतः कोट के अंदर महालय परिसर से थोड़ी- थोड़ी दूर विभिन्न धर्मशालाए बनाई हुई थी । जिसमे सेठ संभ्रांत लोग, वणिक लोग महालय के दर्शन के दौरान कर देकर अपनी-अपनी श्रद्धानुसार रुका करते थे ।

परकोटे में सैनिकों की टुकड़ियों के विश्राम के लिए छावनी का निर्माण किया गया था जिसमे तीनों चौकियों के सैनिक अपनी चाक-चौकसी से नित्य निवृत होकर रुका करते थे।

सैनिक छावनी से थोड़ा दूर नर्तकियों का आवास था। उसके दाहिनी तरफ वेदपाठी ब्राह्मण जो महालय की सेवा में नियुक्त किए गए थे अपने परिवारों सहित रहते थे।

कोट परिसर के अंदर एक विशाल भवन रसद सामग्रियों की पूर्ति के लिए बनाया गया था जिनमे युद्ध आदि होने की स्थिति उत्पन्न होने पर कई दिनों तक चल सके इतनी रसद सामग्री आदि का संचय कर लिया जाता था।

महालय परिसर के दाहिने से थोड़ा आगे तथा अंत कोट के बीचों बीच चन्द्र कुंड बना हुआ था जिसमे स्नान का लोग विशेष महत्व समझते थे। मान्यता थी की इस चन्द्र कुंड का निर्माण चन्द्रमा ने स्वयं दक्ष प्रजापति के श्राप से निवारण होने के पश्चात करवाया था। उत्तर में जो महत्व गंगा स्नान का था वही महत्व उस समय प्रभास तीर्थ में चन्द्र कुंड में स्नान का था। उसमें स्नानार्थ मनुष्य खुद को पाप-ताप-शाप से सदैव मुक्तयर्थ समझकर सदैव निष्पाप समझते थे।

शरद पूर्णिमा को चन्द्र कुंड में स्नान आदि का विशेष महत्व था।

प्रभास पाटन पर अमीर के आक्रमण से पूर्व बनने का क्रम

प्रभास पाटन प्राचीन समय में प्रभास तीर्थ कहा जाता था यहाँ स्थित महालय का निर्माण सोमदेव (चन्द्रमा) ने करवाया था।

इस मंदिर के विषय में कहा जाता है कि इसे नक्षत्रों के राजा और औषधियों के अधिपति चंद्र देव ने बनाया था।

इस तथ्य का उल्लेख ऋग्वेद में भी किया गया है।

कहा जाता है कि राजा दक्ष प्रजापति ने चंद्र देव के प्रभाव और सौंदर्य पर मुग्ध होकर अपनी 27 कन्याओं का विवाह चंद्रमा से कर दिया था ।इन कन्याओं में से रोहिणी नामक कन्या को चंद्र देव ने सर्वाधिक सम्मान दिया। इससे दुखी होकर अन्य कन्याओं ने अपने पिता से शिकायत की। पिता इस अन्याय को सहन नहीं कर सके और उन्होंने क्रोध में आकर चंद्रदेव को क्षयी होने का शाप दे दिया। इससे चंद्र की कांति घटने लगी। वे कांतिहीन हो गए। दुखी होकर चंद्र ने इस स्थान पर आकर भगवान शिव की आराधना प्रारंभ की। चंद्र की कठिन और अविराम तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने शाप का मोचन किया और कहा कि प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष में तुम निरंतर क्षीण होगे और शुक्ल पक्ष में निरंतर तुम्हारी कला बढ़ती हुई कांति को प्राप्त कर, पूर्णमासी को तुम्हारा संपूर्ण कांति युक्त और शोभायुक्त स्वरुप सृष्टि को प्रसन्नता प्रदान करेगा। वरदान प्राप्त कर चंद्र ने कृतज्ञता स्वरुप इस स्थान पर समुद्र किनारे भगवान शिव का भव्य मंदिर बनवाया और मंदिर का नाम रखा- सोमनाथ। सोम यानि चंद्र के नाथ, स्वामी, रक्षक अर्थात शिव।

इस स्थान को भालुका तीर्थ भी कहा जाता है।

तीर्थ को महोदधि (समुद्र) का तीर्थ कहा गया है-

'प्रभासतीर्थ संप्राप्य पुण्यं तीर्थ महोदवे:-[४]

विष्णु पुराण के अनुसार प्रभास में ही यादव लोग परस्पर लड़-भिड़ कर नष्ट हो गये थे-

'ततस्ते यादवास्सर्वे रथानारुह्य शीघ्रगान, प्रभासं प्रययुस्सार्ध
कृष्णरामादिमिर्द्विज। प्रभास समनुप्राप्ता कुकुरांधक वृष्णय: चक्रुस्तव
महापानं वासुदेवेन नोदिता:, पिवतां तत्र चैतेषां संघर्षेण परस्परम्,
अतिवादेन्धनोजज्ञे कलहाग्नि: क्षयावह:' [५]

महाभारत युद्ध के 36 वर्ष बाद इसी तीर्थ में यदुवंशी आपस में लड़े थे जिसमें लगभग सारे यदुवंशियों का विनाश हुआ था। लौकिक आख्यानों के अनुसार इस गृह युद्ध में करोड़ों युदवंशी मारे गए थे। धीरे-धीरे इसने भयानक युद्ध का रूप ले लिया था। संयोग से साम्ब के पेट से निकले मूसल को जब भगवान श्रीकृष्ण की आज्ञा से रगड़ा गया था तो उसके चूर्ण को इसी तीर्थ के तट पर फेंका गया था जिससे उत्पन्न हुई झाड़ियों को यादवों ने एक-दूसरे को मारना शुरू किया था। ऋषियों के श्राप से उत्पन्न हुई इन्हीं झाड़ियों ने तीक्ष्ण अस्त्र-शस्त्रों का काम किया ओर सारे प्रमुख यदुवंशियों का यहा विनाश हुआ। महाभारत के मौसल पर्व में इस युद्ध का रोमांचकारी विवरण है। सारे यादव प्रमुख इस गृह युद्ध में मारे गए।

इसी तीर्थ में महाभारत के महाविनाश और यादवों के विनाश के पश्चात चिन्तित भगवान श्री कृष्ण एक पैर के ऊपर दूसरा पैर रखकर जब विश्राम की मुद्रा में लेटे हुए थे,तो इसी समय उनके तलवे पर हिरण के पदचिह्न को हिरण की आंख समझकर जरा नाम एक ब्याध ने धोखे से तीर मार दिया। इसी बाण के बहाने भगवान ने यहाँ पर अपनी लीला को संवरण कर दिया था । इस प्रकार महाभारत के समय से यह तीर्थ प्रभास तथा वहा पटन नामक राजा द्वारा नगर की स्थापना करने के कारण पाटन कहलाया । प्रभास पाटन में तीन नदियों का जल समुद्र में आकर गिरता था

सरस्वती, कपिला और हिरण्या जिनमे हिरण्या और कपिला जल से नहरे निकालकर महालय में जलापूर्ति व फुलवारियो का सींचन किया जाता था ।

समुद्रं पश्चिमं गत्वा सरस्वत्यब्धि संगमम्'[१]

मंदिर की प्रतिष्ठा सब जगह फैली हुई थी धीरे-धीरे मंदिर में निर्माण कार्य की आवश्यकता होने लगी थी। इसी जगह पर द्वितीय बार मंदिर का पुनर्निर्माण 649 ईस्वी में वल्लभी के मैत्रिक राजाओं ने किया। पहली बार इस मंदिर को 725 ईस्वी में सिन्ध के मुस्लिम सूबेदार अल जुनैद ने तुड़वा दिया था। फिर प्रतिहार राजा नागभट्ट ने 815 ईस्वी में इसका पुनर्निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त गजनी के अमीर महमूद के आक्रमण से पूर्व 1026 ई० मंदिर में थोड़ा-थोड़ा निर्माण कार्य आवश्यकतानुसार भूपतियों द्वारा करवाया जाता रहा।

* * *

लकुलीश मत व गंग सर्वज्ञ

प्राचीन समय में ब्रह्मा की पूजा का विशेष प्रचलन हुआ करता था। समय परिवर्तन के साथ ब्रह्मा के स्थान पर विष्णु की पूजा का प्रचलन बढ़ने लगा। गुप्त काल के पूर्व शिव पूजा का प्रचलन आम जन में जोरो पर था।

महाभारत में भी माहेश्वरों (शैव) के 4 संप्रदाय बतलाए गए हैं- शैव, पाशुपत, कालदमन और कापालिक। इसके अलावा एक कश्मीरी शैव संप्रदाय, लकुलीश, कालमुख शैव, वीरशैव संप्रदाय, तमिल शैव, शिवाद्वैत धर्म अथवा लिंगायत भी है। लकुलीश सम्प्रदाय या 'नकुलीश सम्प्रदाय' के प्रवर्तक 'लकुलीश' माने जाते हैं। लकुलीश को स्वयं भगवान शिव का अवतार माना गया है। लकुलीश सिद्धांत पाशुपतों का ही एक विशिष्ट मत है। इसका उदय गुजरात में हुआ था। लकुलीश की मूर्तियों में लकुलीश तथा योगीश्वर शिव दोनों के स्वरूपों को अंकित किया जाता था। लकुलीश चार भुजाओं, श्रीवत्स लांछन, जटामुकुट तथा पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए उत्कीर्ण किए जाते थे। ग्याहरवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक लकुलीश का प्रतिमा वैज्ञानिक विधान निश्चित रुप को प्राप्त हो चुका था। लकुलीश की मूर्ति को लकुटी (लकड़ी) हाथ में दिखाए जाने के कारण इस नाम से नामकरण किया गया। ग्यारहवीं सदी आते-आते लकुलीश व पाशुपत मिलकर एकमत्य हो गए थे। नौवीं सदी के अंत तक लकुलीश मत में मंत्रोच्चारण व साधना के स्थान पर वाममार्गी क्रियाएं ज्यादा बढ़ने लगी थी।

तकरीबन 970 ई० के लगभग सोमनाथ महालय के अधिपति भूषण रहा करते थे। उनके पास एक तरुण युवक पहुंचा। चेहरा अत्यंत सुकुमार मानो अगर थोड़ा सा काम करे तो मुख कमल कुम्हला जाए, कृष शरीर, दोनों आखों से तेज बरस पड़ता था, पतली कटी, भुजाए भी ज्यादा बलिष्ठ ना थी, शरीर के माप की तुलना में पेट थोड़ा सा ज्यादा वेशभूषा से ही लग रहा था वह लड़का कोई ब्राह्मण है। लड़के ने जाकर कोट के अंदर प्रवेश की अनुमति चाही। शाम का समय था। सूर्य ढल चुका था। अंतः कोट के द्वार बंद हो चुके थे। सूर्य की थोड़ी बहुत लालिमा काले स्याह

आकाश को भेदते हुए नजर आ रही थी। तिमिर को चीरकर चन्द्रदेव निकलने को आतुर हो रहे थे। द्वारपाल ने पहली बार तो मना कर दिया किंतु लडका जिद्द पकड़ कर वही बैठ गया तो द्वारपाल ने अंदर से सैनिकों को आवाज देकर पूछा दुर्गपति खजानसिंह से पूछ कर आओ। दुर्गपती खजानसिंह ने बच्चे को अंदर आने की अनुमति दे दी। बच्चा अंदर आते ही फफक-फफक कर रो पड़ा था।

पहरेदार ने बच्चे को पास बैठाया, सांत्वना दी,और बच्चे को आचार्य भूषण के पास भेज दिया गया। लड़के का नाम गंग था उसके माता पिता शत्रु देश के सैनिकों के हाथों युद्ध में मारे जा चुके थे। आचार्य भूषण ने गंग को अन्य विप्र बालकों के साथ प्रशिक्षित करना आरंभ कर दिया। लड़के की मेधा शक्ति तीव्र थी। थोड़े दिन में ही गंग ने अपनी तीव्र मेधा शक्ति से सम्पूर्ण विद्याओं का ग्रहण कर लिया था तथा उत्तम गुरुभक्ति से आचार्य भूषण सहित लकुलेश मत व पाशुपत संप्रदाय के अधिष्ठाताओं का हृदय जीत लिया था। आचार्य भूषण अब वृद्ध हो चले थे। पाशुपत मत व लकुलीश संप्रदाय की कमान किसी को तो सँभालनी थी। आचार्य भूषण ने गंग को संप्रदाय के अधिपति व गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहा किंतु अन्य शिष्यों में विरोध के स्वर मुखरित हो गए। अधिष्ठाता का पद अब गुरु की इच्छा पर ना होकर योग्यता पर दिए जाने की मांग की जाने लगी। शास्त्रार्थ का समय निर्धारित किया गया। गंग को शिव, भगीरथ,उत्तान और कौतक इन चारो से शास्त्रार्थ के बाद ही अधिपति का पद मिल सकता था। गंग ने इन चारो को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया और इस प्रकार केवल 19 वर्ष की अल्पायु में गुरु के आशीर्वाद से महालय के अधिपति पुजारी के रूप में चिर प्रतिष्ठित हुए।

लकुलीश मत के गिरते महत्व को विश्व पटल पर पुनः प्रतिष्ठित किया। सब विषय ज्ञात होने के कारण उनको विद्वत परिषद ने सर्वज्ञ की उपाधि दी। और इस प्रकार वो गंग सर्वज्ञ के नाम से प्रतिष्ठित हुए। अपनी योग्यता व विद्वता के बल पर उन्होंने लकुलीश मत का महात्म्य बढ़ाया। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी, विंध्य से लेकर सिंध तक, बंग से मुल्तान तक प्रत्येक जगह पाशुपत व लकुलीश मत के साथ-साथ गंग सर्वज्ञ की प्रतिष्ठा व महत्व दोनों बढ़ा था।

यामीन अब्दुल कासिम महमूद का गजनी का अमीर बनना और भारत पर सोमनाथ से पूर्व उसके आक्रमण

2 नवंबर, 971 को यामीन अद-दावला अब्दुल-कासिम महमूद इब्न सबुक्तेगिन, जिन्हें गजनी के महमूद के नाम से जाना जाता है, का जन्म दक्षिणपूर्व अफगानिस्तान के गजना शहर (जिसे अब गजनी के नाम से जाना जाता है) में हुआ था। उनके पिता अबू मंसूर सबुक्तेगिन तुर्क थे, जो गजनी के पूर्व मामलुक गुलाम योद्धा थे।

जब बुखारा (अब उज्बेकिस्तान में) में स्थित समानीद या सामानी राजवंश का पतन शुरू हुआ, तो सबुक्तेगिन ने 977 में अपने गृहनगर गजनी पर नियंत्रण कर लिया। उसके बाद उसने कंधार जैसे अन्य प्रमुख अफगान शहरों पर विजय प्राप्त की। उनके साम्राज्य ने ग़ज़नवी साम्राज्य का केंद्र बनाया, और उन्हें राजवंश की स्थापना का श्रेय दिया जाता है।

महमूद गजनवी के बचपन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। उनके दो छोटे भाई थे; दूसरा, इस्माइल, सबुक्तेगिन की प्रमुख पत्नी से पैदा हुआ था। तथ्य यह है कि वह, महमूद की मां के विपरीत, एक कुलीन परिवार की स्वतंत्र महिला थी, जो उत्तराधिकार के प्रश्न में महत्वपूर्ण हो गई जब 997 में एक सैन्य अभियान के दौरान साबुक्तेगिन की मृत्यु हो गई

उतराधिकार की लड़ाई

अपनी मृत्यु शय्या पर, सबुक्तेगिन ने अपने सैन्य और कूटनीतिक रूप से कुशल सबसे बड़े बेटे महमूद को दूसरे बेटे इस्माइल के पक्ष में सौंप दिया। ऐसा लगता है कि उसने इस्माइल को इसलिए चुना क्योंकि वह बड़े और छोटे भाइयों के विपरीत, दोनों तरफ के गुलाम लोगों का वंशज नहीं था।

जब महमूद, जो निशापुर (अब ईरान में) में तैनात था, ने अपने भाई की सिंहासन पर नियुक्ति के बारे में सुना, तो उसने तुरंत इस्माइल के शासन के अधिकार को चुनौती देने के लिए पूर्व की ओर मार्च किया। महमूद ने 998 में अपने भाई के समर्थकों पर विजय प्राप्त की, गजनी पर

कब्जा कर लिया, खुद के लिए सिंहासन ले लिया और अपने छोटे भाई को जीवन भर के लिए नजरबंद कर दिया

शासक के रूप में महमूद

जिस समय महमूद ने शासन संभाला उस समय गजनवी एक दुर्गम्य जनविहीन प्रदेश था। वहा की पहाड़ियों में सामान्य रूप से लुटेरे निवास किया करते थे। जब महमूद ने गजनवी के अमीर का पद संभाला तो गजनवी के सामने आर्थिक समस्या सबसे बड़ी थी । गजनवी एक महत्वाकांक्षी सुलतान था। उसने अपने सैनिकों को बर्बर बनाने के लिए तमाम हथकंडे अपनाए। उसका सबसे प्रमुख हथकंडा था की वह अपने सैनिकों को जिहाद की आग में झोंककर हिन्दू, बौद्ध, जैनों जिनको वह काफिर कहता था धर्म परिवर्तन करवाकर गाजी बनना चाहता था और जो ऐसा नही कर सके उन्हें नेस्तनाबूद करना चाहता था ।

तीव्र आकांक्षा, कुशल रणनीति, मौका देखकर युद्ध से पीछे हटना, सैनिकों को आवेशित करना, साम, दाम,दण्ड, भेद से शत्रु पक्ष को भी पक्षधर बना लेने जैसे एक कुशल सेनानायक के गुणों सहित एक कूटनीतिज्ञ के समस्त गुण उसमे थे।

महमूद गजनवी ने आसपास के क्षेत्रों में लूटपाट करना शुरू कर दिया।

भारत की तरफ महमूद गजनवी का ध्यान 998 ई ०में गया। लेकिन उसने आक्रमण करने के दौरान तीन साल की सैन्य तैयारी की ओर सन 1001 ई ० में जब सिंध पर महाराज जयपाल का शासन था। महाराजा जयपाल की सेना बहुत शक्तिशाली थी। अमीर सीधे तौर पर जयपाल से टक्कर नही ले सकता था इसलिए अमीर ने जयपाल की सेनाओं में कुछ लालची व्यक्तियों को अपनी तरफ शामिल करके कूटनीति से युद्ध करने का तथा भारत पर प्रतिवर्ष एक बार आक्रमण करने का कथित प्रण किया।

खैबर घाटी जो की अफगानिस्तान के और भारत के मध्य सीमा निर्धारण का कार्य करती थी। उसका सूबेदार और नवाब अल हमीर को नियुक्त किया। शर्त के अनुसार अल हमीर खैबर घाटी में अफगानिस्तान के

किसी भी सुल्तान को प्रवेश नही देगा तथा घाटी से प्राप्त चौथ का भाग भेजता रहेगा।

जब जयपाल को अमीर के आक्रमण की सूचना मिली तो। जयपाल अपनी विशालकाय सेना सहित जलालाबाद में अमीर का तलवारों से स्वागत करने आ गया। उधर अमीर सीधे तौर पर सिंध के रास्ते भारत में प्रवेश नही कर सकता था इसलिए उसने युद्ध टालने का बहाना बनाकर गुप्त रूप से अल हमीद से मुलाकात कर ली। वर्षा ऋतु के समाप्त होते खैबर घाटी में बर्फबारी शुरू होने लग गई थी। अमीर के निर्देशानुसार अल हमीद ने घाटी का रास्ता बंद कर दिया था। जयपाल की सेना बर्फ में लड़ने की अभ्यस्त न थी। परिणामस्वरूप कुछ सेना बर्फबारी में मर गई, बची कूची सेना ने आत्मसमर्पण किया।

इस युद्ध के बाद जयपाल की सेना के एक बहुत बड़े हिस्से को तथा जयपाल के कुछ रिश्तेदारों को बंदी बना लिया गया।
यह समय दिसंबर के आसपास का था

महमूद के एक दरबारी कवि अनसुरी ने लिखा है कि उन्हें दास बाजार में बेच दिया गया था; मिन्हाज अल-मलिक इसामी ने 80 दिरहम/दीनार की कीमत जोड़ी है। अल-अंसाब जैसे अन्य लोगों का कहना है कि महमूद ने क्षमा के उनके अनुरोध को अस्वीकार कर दिया था, लेकिन उन्हें मार्च 1002 के आसपास 25 लाख दिरहम और 50 युद्ध-हाथियों के भुगतान के बदले मुक्त होने की अनुमति दी थी, जिसे रहमान अधिक संभावना मानते हैं। जयपाल हुंड लौट आया और अपने बेटे आनंदपाल के पक्ष में सिंहासन छोड़ने के बाद उसने खुद को चिता में जला लिया।

इस प्रकार भारत में प्रथम बार गजनवी के अमीर यामीन महमूद कासिम (गजनवी) का भारत में प्रवेश हुआ।

महमूद ने भारत के सिंध से बहुत सी संपति लूटी तथा प्रत्येक दास को बेचकर जो बन पड़ा उससे गजनवी के उजाड़ से पड़े शहर में इमारतों का कार्य होने लगा। भारत में भ्रमण करने के दौरान किलों आदि का सामरिक

दृष्टिकोण से क्या महत्व रहता है ये बात अमीर को जल्द समझ आ गई । इसलिए उसने गजनी में सम्पूर्ण नगर की चारदीवारी का कार्य करवाने का फैसला किया । लेकिन इसके लिए बहुत से धन की आवश्यकता थी इसलिए अमीर यामीन महमूद अब्दुल कासिम ने भारत सहित आसपास के समृद्ध राज्यो पर प्रतिवर्ष आक्रमण करने की प्रतिज्ञा की।

महमूद और काव्य कला तथा साहित्य

सुल्तान महमूद को किताबें पसंद थीं और वह विद्वानों का सम्मान करता था। उसके दरबार में तकरीबन 400 कवियों को आश्रय प्राप्त था । गजनी में अपने गृह क्षेत्र में, उन्होंने बगदाद, जो अब इराक में है, में अब्बासिद ख़लीफ़ा के दरबार की प्रतिद्वंद्विता के लिए एक पुस्तकालय का निर्माण किया।

विश्व के अलभ्य पुस्तको को प्राप्त करने के लिए उसने पैसा पानी की तरह बहाया।

यद्यपि स्वभाव से महमूद कंजूस था फिर भी महमूद ने विश्वविद्यालयों, महलों और भव्य मस्जिदों के निर्माण को भी प्रायोजित किया, जिससे उसकी राजधानी मध्य एशिया का गहना बन गई।

गजनी के सुदूरवर्ती क्षेत्र में उसने अनेको पाठशालाओं का निर्माण करवाया।

अपने नवें आक्रमण का निशाना उसने मथुरा को बनाया। उसका वह आक्रमण 1017 ई. में हुआ। मथुरा को लूटने से पहले महमूद गज़नबी को यहाँ एक भीषण युद्ध करना पड़ा। यह युद्ध मथुरा के समीप महावन के शासक कुलचंद के साथ हुआ।

महमूद के मीरमुंशी अल-उत्वी ने अपनी पुस्तक 'तारीखे यामिनी' में इस आक्रमण का वर्णन किया है। उसने लिखा है –

'कुलचंद का दुर्ग महावन में था । उसको अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा था क्योंकि तब तक कोई भी शत्रु उससे पराजित हुए बिना नहीं रहा था। वह विस्तृत राज्य, अपार वैभव, असंख्य वीरों की सेना, विशाल हाथी और

सुदृढ़ दुर्गों का स्वामी था, जिनकी ओर किसी को आँख उठा कर देखने का भी साहस नहीं होता था। जब उसे ज्ञात हुआ कि महमूद उस पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है, तब वह अपने सैनिक और हाथियों के साथ उनका मुक़ाबला करने को तैयार हो गया। अत्यंत वीरतापूर्वक युद्ध करने पर भी जब महमूद के आक्रमण को विफल नहीं कर पाया, तब उसके सैनिक क़िले से निकल कर भागने लगे, जिससे वे यमुना नदी को पार कर अपनी जान बचा सकें। इस प्रकार लगभग 50,000 (पचास हज़ार) सैनिक उस युद्ध में मारे गये या नदी में डूब गये, तब कुलचंद्र ने हताश होकर पहले अपनी रानी और फिर स्वयं को भी तलवार से समाप्त कर दिया। उस अभियान में महमूद को लूट के अन्य सामान के अतिरिक्त 185 सुंदर हाथी भी प्राप्त हुए थे।'

फरिश्ता ने भी उस युद्ध का उत्वी से मिलता जुलता वर्णन किया है-

'मेरठ आकर सुलतान ने महावन के दुर्ग पर आक्रमण किया था। महावन के शासक कुलचंद्र से उसका सामना हुआ। उस युद्ध में अधिकांश हिन्दू सैनिक यमुना नदी में धकेल दिये गये थे। राजा ने निराश होकर अपने स्त्री-बच्चों का स्वयं वध किया और फिर ख़ुद को भी मार डाला। दुर्ग पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। महावन की लूट में उसे प्रचुर धन-सम्पत्ति तथा 80 हाथी मिले थे।'

महमूद गजनवी और उसके दरबार के विभिन्न कवि महमूद गजनवी के दरबार में तकरीबन 400 कवि आश्रय पाते थे जिनमे सबकी जानकारी मिलना प्रायः दुर्लभ है तीन मुख्य कवियों की जानकारी और उनका काव्य परिचय निम्न प्रकार है

महमूद अलउत्वी– यह महमूद ग़ज़नवी का मीर मुंशी था, हालाँकि आक्रमणों में वह साथ में नहीं था। उसने सुबुक्तगीन तथा महमूद के शासन-काल का सं. 1077 तक का इतिहास अरबी भाषा में अपनी किताब "उल-यमीनी" में लिखा है। इस किताब में महमूद के सं. 1027 ई० तक के आक्रमणों का विस्तृत वर्णन मिलता है। उसका विवरण पक्षपात पूर्ण है।

उसने भारतीयों की दुर्बलता और विदेशी मुसलमान आक्रमणकारियों की वीरता का अतिश्योक्तिपूर्ण विवरण किया है।

अलबरूनी – मुस्लिम लेखकों में अलबरूनी का विवरण प्रायः पक्षपात रहित है। वह भारतीय दर्शन, ज्योतिष, इतिहास, आदि का उत्कृष्ट विद्वान् और धीर गम्भीर प्रकृति का लेखक था। उसका जन्म एक छोटे से राज्य ख्यादिम में 4 सितंबर सन् 973 में हुआ था। वह महमूद ग़ज़नवी के आक्रमणों में उसके साथ रहा था, किंतु उसको लूट-मार से कोई मतलब नहीं था। वह भारतीयों से निकट संबंध स्थापित कर उनकी भाषा, संस्कृति, धर्मोपासना एवं विद्या-कलाओं की जानकारी प्राप्त करने में लगा रहता था। उसकी सीखने की क्षमता ग़ज़ब की थी। थोड़ी ही कोशिश में बहुत सीखने की उसमें अद्भुत प्रतिभा थी। भारतीय संस्कृति और धर्म-दर्शन का प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसने संस्कृत एवं प्राकृत भाषाएँ सीखी थीं, और उनके ग्रंथो का अध्ययन किया था। उसने अनेक भारतीय ग्रंथों का अरबी भाषा में अनुवाद भी किया।

इमाम वैराकी– उसका पूरा नाम इमाम, अबुल फ़ज़ल वैराकी था। वह महमूद ग़ज़नवी के दरबार में हाकिम था। उसने जो ग्रंथ लिखा उसका नाम "तारीख़-ए-अरब-ए-सुबुक्तगीन" अर्थात सुबुक्तगीन वंश का इतिहास। इसमें सुबुक्तगीन और उसके पुत्र-पौत्र महमूद ग़ज़नवी एवं उसके शासन-काल की घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। इसमें प्रासंगिक रूप से महमूद के भारतीय आक्रमणों का भी कुछ विवरण लिखा गया है, जो उल्लेखनीय ईमानदारी का प्रमाण है। यह ग्रंथ तीन भागों में है किंतु इस समय उसका केवल तीसरा भाग ही उपलब्ध है। आरंभ के दो भाग नष्ट हो गये। उपलब्ध भाग फ़ारसी भाषा में है।

★ ★ ★

अलबरूनी का महमूद के दरबार में आना

अलबरूनी का पूरा नाम अबु रेहान मुहम्मद बिन अहमद अल – बदरूनी था। अलबरूनी का जन्म 4 सितंबर सन 973 ई. में ख्वारिज्म में हुआ था। ख्वारिज्म वर्तमान में उज्बेकिस्तान में है।

अब्बासी शासन का वहा उन दिनों शासन हुआ करता था । अब्बासी शासन के समय आक्रमण का कार्य अल्प तिगिन के समय से शुरू हो गया था । अल्प तिगीन एक तुर्क गुलाम थे ।

उन्होंने गजनी प्रदेश के शासन की बागडोर सुबुक्तगीन से अपनी बेटी की शादी करके उन्हे सौपी थी इस प्रकार सुबुक्तगीन गजनी का पहला स्वतंत्र बादशाह बना ।

आक्रमण के इस पद्धति का पालन सुबुक्तगीन के बादशाह बने उसके बेटे यामीन अब्दुल महमूद कासिम ने भी निभाया ।

उसने अब्बासी शासकों के कमजोर पड़ते प्रतिनिधित्व का फायदा उठाकर ख्वारिज्म के अब्बासी शासकों पर हमला बोल दिया । महमूद गजनवी का हमला केवल देश या उसके राजा तक ही सीमित नही होता था । राजनैतिक कैदियों को बंदी बनाकर राजनैतिक प्रयोजन सिद्ध करने की चेष्टाएं की जाती थी । सामान्य कैदियों को गजनी आदि राज्यों में खुले में बोली लगाकर गुलाम बनाकर बेच दिया जाता था । अमीर को जब पता लगा की अलबरूनी ना केवल साहित्य के विद्वान है अपितु ज्योतिष और गणित में भी उनकी महारथता है तो राजनैतिक प्रयोजन की दृष्टि से उन्हे राजनैतिक कैदियों में शामिल करके अपने दरबार में ले आए।

अलबरूनी ने गणित और खगोलविज्ञान अबू नस्र मंसूर से सीखी। वे अवेसिन्ना के साथी थे। अफ़ग़ानिस्तान और दक्षिण एशिया की यात्रा पर वो महमूद गज़नवी के साथ उसके काफ़िले में गया। भारत में रहते हुए उसने भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया।

★ ★ ★

नरेन्द्र

महाराज प्रवर्सन को उनकी सेवाओं से संतुष्ट होकर कंधकोट को सिंध से एक छोटी सी रियासत का दर्जा 1008 ई० में दिया गया। महाराज प्रवर्सन एक उदार, गंभीर प्रकृति के शासक थे। उनके 2 ही प्रिय शौक हुआ करते थे। एक तो शिकार खेलना, दूसरा मल्ल युद्ध का आयोजन करना। राज्यारोहण के कुछ दिनों बाद महाराज प्रवर्सन एक बार शिकार खेलने गए हुए थे दैवयोग से वे अपनी साथियों से अलग हो गए व पथ भूल गए। घोड़े के एड लगाकर महाराज ने रोकना चाहा किंतु घोड़ा रुकने के बजाय घबराकर भाग खड़ा हुआ। इसी उहापोह में महाराज की शाही तलवार भी गिर गई। एक कटीले से रास्ते पर जाकर घोड़ा बिदक गया। बार बार पैरो को ऊपर उठता किंतु आगे एक डग भी नही रखता। महाराज ने घोड़े को फिर से एड लगाई । घोड़ा पूरे वेग से 2-3 बार उछला। महाराज को घसीटते हुए घोड़ा सरपट दौड़ते लगा । घीसटते- घीसटते महाराज को घोड़ा काफी दूर ले आया। थोड़ा सा आगे जाकर घोड़ा 2-3 बार जोर-जोर से हिनहिनाया।

शायद आगे जंगली जानवरों का भय था। घोड़ा पीछे की और द्रुत गति से दौड़ा। काठी से प्रवर्सन का पैर निकल गया। घोड़ा तगड़क-तगड़क सरपट दौड़ गया। प्रवर्सन एक साइड में गिर गए। खुद को थोड़ा सा सम्हाला। दिशा भ्रम हो गया। दिशाएं सूझ नही रही थी। बबूल, खेजड़ी, के सूखे वृक्षों से छनकर आता प्रकाश, पक्षियों का चहचहाता कलरव, सुरभित सौंधी सुगंध वातावरण में चार चाँद जरूर लगा रही थी। किंतु घोड़े से घिसटने के कारण कंध कोट नरेश का बुरा हाल था। शरीर पर जगह-जगह जख्म हो गए थे। मारे दर्द के सर फटा जा रहा था। पानी के किसी दरिया की स्रोत की तलाश में इधर- उधर देखने की कोशिश की लेकिन आसपास से किसी हिंसक जानवर की आवाज आई। आवाज थोड़ा करीब आई तो शेर गुर्रा रहा था। एक तो मारे थकान के बदन टूट रहा था। दिशाएं सूझ नही रही थी ऊपर से यह मुसीबत। यह तो कोढ़ में खाज हो गया। ज्यों

ही आवाज पास आती महाराज क्षण- क्षण अपनी मृत्य को समीप पाते । सारे जीवन के पुण्य- पाप आँखो के आगे तांडव करने लगे । हथियार होता तो भी कुछ करते । भागने का माध्यम था नहीं । महाराज मन ही मन अपने को कोस रहे थे । अच्छे आए शिकार खेलने । "लूटने आया बहारो को मियाँ कांटो से जख्म खा बैठे" ।

संकट में आस्थावान मनुष्य के पास अंतिम उपाय ईश्वर होता है । प्रवर्सन भी अपने आराध्य से प्रार्थना करने लगे आज के बाद इस शिकार के शौक को ही छोड़ दूंगा । मैने भी ना जाने कितने ही जानवरो की प्रतिहिंसा की है उसका फल तो मिलना ही था । अगर इस मुसीबत से छूट गया तो सदाव्रत खुलवाऊंगा और भी न जाने क्या क्या .... ?

अब शेर और महाराज का फासला दस हाथ से भी कम रह गया। मारे डर के कंपकंपी छुटने लगी । आँखे बंद होने लगी । तभी शेर की आवाज कम होने लगी । शायद उसकी प्रार्थना से शेर चला गया । आँखें मारे डर के अब भी खुलने का नाम नही ले रही थी । बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटाते हुए प्रवर्सन ने आँखें खोली । सामने एक युवक निहत्थे शेर से लड़ रहा था । शायद जब शेर प्रवर्सन पर झपट्टा मारने वाला हो इसी दौरान वह युवक बीच में आ गया था । युवक और शेर दोनों लड़ रहे थे । युवक ने शेर को पकड़ा हुआ था और शेर युवक पर अपने पंजों से नाखून लगाने का भरपूर प्रयास कर रहा था । सिंह का मुख युवक ने इस भांति पकड़ा हुआ था की उसके दांत मुँह में ही दबकर रह जाते थे । काफी देर की गुत्थम गुत्था के बाद युवक ने बात की बात में शेर का जबड़ा फाड़ दिया । लोहू से युवक के हाथ लाल हो गए ।

युवक प्रवर्सन के सामने आकर खड़ा हो गया । लम्बा कद, मांसल भुजाए, घुंघराले बाल, खिचड़ी दाढ़ी, उठी हुई छाती, छरहरी आंखे, चेहरे पर झलकता तेज, उम्र बीस बाईस से ज्यादा न रही होगी लेकिन मुखमुद्रा पर गांभीर्य था ।

तुम कौन हो युवक ?

महाराज ने प्रश्न किया ।

मेरा नाम नरेन्द्र है।

तुम्हारा कुल गौत्र क्या है ?

मैं यहाँ के गुर्जर ग्वालो के अधिपति लखन का पुत्र हु।

तुम करते क्या हो वत्स ?

पिता गाय चराने का कार्य करते है तो मैं भी वही करता हु।

तुम्हारी जगह यहाँ नही है, तुम्हारी जगह है,राज्य प्रशासन के संचालन में।

गौ माता की सेवा करना निश्चित रूप से बड़ा धर्म है।

किंतु राज्य के निमित भी कुछ कर्तव्य है, गौ सेवा कही भी की जा सकती है।

नरेन्द्र धीर-गंभीर प्रकृति का युवक था।

प्रवर्सन की बाते उसे जल्द समझ में आ गई।

प्रवर्सन को वो नगर की राह तक छोड़ कर आए।

प्रवर्सन से दूसरे दिन दरबार में आने का वायदा करके नरेन्द्र ने विदा ली।

★ ★ ★

दरबार में

प्रवर्सन से निश्चित वायदे के मुताबिक नरेन्द्र दरबार में जाने के लिए तैयार हुआ। प्रवेश द्वार पर पहरेदारों ने रोक लिया। अंदर पहरेदार ने नाम और पहचान बताकर सूचना दी तो महाराज ने आने की अनुमति दे दी।

नरेन्द्र दरबार में पहुंचा। महाराज प्रवर्सन एक स्वर्ण जड़ित सिंहासन पर बैठे हुए थे। छत्रधारियो ने छत्र पकड़ा हुआ था, एक-२ सेविकाएं चंवर डुला रही थी। रत्न जड़ित पोशाक चमचमा रही थी। दरबार खचाखच भरा हुआ था। प्रवर्सन का सिंहासन सबसे ऊंचाई पर बना हुआ था। उनसे नीचे वाले सिंहासनो पर महामंत्री, मंत्री, खजांची, धर्मगुरु इत्यादि अपने- अपने सिंहासनों पर आरूढ़ थे। महाराज ने आगे बढ़कर उन्हें गले लगा लिया। दरबार में बैठे मंत्रिपरिषद में बड़ा कौतुहुल था, आज ही हमने इस शख्स को पहली बार देखा है महाराज इसे इतना सम्मान क्यों दे रहे है ?

सबके चेहरे को देखकर महाराज ने ताड़ लिया। मंत्रिपरिषद को संबोधित करते हुए महाराज ने बताया की किस प्रकार नरेन्द्र ने महाराज की विकट वन में सिंह से रक्षा की थी।

साथ में प्रवर्सन ने घोषणा कर दी की नरेन्द्र को कंधकोट के 15 गाँवो की सूबेदारी भी दी जाएगी।

प्रवर्सन वैसे तो एक संतोषी नृप थे किंतु नरेन्द्र से मिलने के बाद लोभ- लालच ने उन्हें आ घेरा था। अपनी रियासत को बढ़ाने के लिए वो लालायित हो उठे थे। वे सिंध जैसी रियासत बनाने के खुले नेत्रो से सपने देखने लग गए थे। अपनी आकांक्षा की पूर्ति में उन्हें सहायक नजर आ रहा था नरेन्द्र। जिसकी वीरता का साक्षात ज्वलंत साक्षात्कार उन्होंने विकट वन में किया था।

महामंत्री भंवरसिंह को बुलाकर दस्तावेज तैयार करवा दिए गए।

उन दिनों कंध कोट की सीमा की सबसे अंतिम चौकी लरकाना हुआ करती थी। महामंत्री भंवरसिंह को कुछ दिनों तक नरेन्द्र के साथ भेज दिया गया ताकि वह सीमा और प्रांत के बारे में अच्छे से समझ सके।

लरकाना पहुंच कर नरेन्द्र ने वहा की सैन्य व्यवस्था को देखा। कुछ दिनों में उसे सैन्य व्यवस्था और व्यूह भेदन का सम्पूर्ण ज्ञान हो गया। उन दिनों लरकाना प्रांत में धर्म। परिवर्तन करने का मुस्लिम सुल्तानो द्वारा कार्य जोरो से चल रहा था।

लरकाना एक बड़ा नगर हुआ करता था। नगरजनों की सुरक्षा व्यवस्था को ध्यान में रखकर वहा केवल कुछ सैनिक रखे और चौकी को बाघ तलाई के लिए प्रतिस्थापित किया।

अचानक से चौकी का स्थान बदल जाना सबकी समझ से बाहर था। एक तो इतने खतरे ऊपर से रही सही सैनिक चौकी और हटा दी। पौरजनों में घबराहट स्वाभाविक थी। यह नरेन्द्र की मूर्खता का परिणाम था या कुशल दूरदर्शिता का परिणाम था अभी कुछ कहा नहीं जा सकता था।

★ ★ ★

निसिका का प्रेम

जाफराबाद में गुर्जर ग्वालों की बस्ती हुआ करती थी। वहाँ के सभी ग्वालों का सरदार रामोजी थे। रामोजी के पास 2000 से अधिक गाये थी। प्राचीन भारत में समृद्धि का आधार गाय थी जिसके पास जितना गौधन अधिक हुआ करता था वह उतना ही समृद्ध समझा जाता था। गावो विश्वस्य मातरम की अवधारणा जफराबाद की गुर्जर बस्तियों में ज्वलंत थी। रामोजी के भवन बहुत बड़े- चढ़े हुए थे। भवन में सुख साधनों का अभाव नही था। रामोजी के एक लड़की और 3 लड़के थी। लड़की सबसे छोटी थी। माँ बाप ने नाम रखा था निसिका। लड़की ने यौवन की दहलीज पर अभी पैर रखा ही था। एक दिन निसिका अपनी सहेली के साथ गाँव से बाहर बने तालाब जो गांव से कुछ कोस की दूरी पर बना हुआ था के किनारे गई हुई थी।

दोनों सहेलियाँ जल को अपनी अंगुलियों में भरकर जलचरो के साथ अठखेलियाँ कर रही थी। दिन कब छिपा उनको पता ही नही लगा। सूर्य अपनी आखिरी किरणों को समेट रहा था। श्यामल कालापन आकाश में छाने लगा था जिसके बीच थोड़ी सी लालिमा चमक रही थी। शाम हो गई दूसरी युवती ने निसिका का ध्यान तोड़ते हुए कहा। हे शिव ! अब घर कैसे जायेंगे। एक तो जंगल दूसरा यहाँ दूर-दूर तक कोई बस्ती नहीं। हाँ थोड़ी दूर एक सैनिक चौकी जरूर है। अचानक दो परछाई उनको दिखाई दी। दोनों सहम कर सिकुड़ गई। उन दिनों म्लेच्छों का वहा बड़ा आतंक था। म्लेच्छ सैनिक दुर्दन्यतापूर्ण जो हाथ लग जाता वही लूट ले जाते। इस तरह डरने से तो काम नही चलेगा। जो भी हो रह- सहकर स्थिति का मुकाबला तो करना ही है। परछाई पास आती गई। उन परछाई ने दो मनुष्यो का रूप धारण कर लिया। अनुमान सही निकला। दोनों व्यक्ति म्लेच्छ ही थे। लम्बे कद, बेडौल शरीर में एक विशालकाय राक्षस की सी आकृति दिखाई दी। दोनों म्लेच्छ हँसने लगे। अब भागो कहा भागोगी ? पुकारो सहायता के लिए किसे पुकारती हो ? निसिका की सहेली जिसका

नाम तारा था ने बड़ी युक्ति से काम लिया। उसने म्लेच्छ को कहा हम कही नहीं भागेंगे। हम तो अपने आपको स्वयं आपके अर्पण करने को आतुर है। आप जैसा महावीर भला मिलता है क्या ? तारा को झिड़कते हुए निसिका ने कहा पागल हो गई ? एक म्लेच्छ से प्रेम ? तारा ने आँखों से कुछ इशारा किया ? नयन संदेश को प्राप्त करके निसिका ने मुस्कुराते हुए कहा जब तुम्हे ही आपत्ति नहीं तो मैं भी क्या करू ? दोनों सहेलियों की कूटनीति को म्लेच्छ समझ नहीं सके। कामी मनुष्य का सबसे पहले विवेक मात खाता है।

तारा ने एक म्लेच्छ को बहलाते फुसलाते कहा इस रास्ते पर कोई ना कोई मिल जायेगा आपको इस रास्ते चलना चाहिए। वासना के वशीभूत म्लेच्छ का विवेक जाता रहा। दोनों म्लेच्छ दोनों सुंदरियों के पीछे चल दिए। रास्ते में उन दोनों को थोड़ा घुमाती हुई दोनों उन्हें चौकी के रास्ते ले आई। चौकी के नजदीक पहुँचने पर म्लेच्छ समझ गए उनके साथ धोखा हुआ है किंतु ज्यादा हो हल्ला ना करके चुप रहने में ही भलाई है। चौकी पर प्रहरा दे रहे सिपाहियो ने इतनी रात 2 हिन्दू लड़कियों के साथ 2 म्लेच्छ को देखा। निश्चित रूप से कुछ गड़बड़ी है। नरेन्द्र को जाकर सूचना दे दी। इससे पहले की म्लेच्छ भागते उनको धर दबोचा गया। दोनों लडकियो ने आपबीती बताई। दोनों को अंदर लाकर आदर सत्कार किया। मोमबत्तियों और दीपकों की रोशनी जगमगा रही थी। कमरे के अंदर केवल 2 रूपसिया बैठी हुई थी। थोड़ी देर बाद नरेन्द्र आया। निसिका को देखा तो देखता ही रह गया।। गौर वर्ण, चेहरे पर चंद्रिका सी चाँदनी, कुमुदनी के से खुले ओष्ठ, मुख खुलने पर धवल मोतियों की सी माला, उभरे हुए नितम्बो पर चमकता हार, शरीर से आती चंदन चर्चित खुशबू, रति का सा सौंदर्य। क्या कुछ नहीं था उस युवती के सौंदर्य में। युवती कटाक्ष भरे नेत्रो से नरेन्द्र को देखती, फिर बौहो को फेर लेती। प्रारंभिक काल से स्त्रियों के सबसे बड़े हथियार यही रहे है पुरुष को वशीभूत में करने के। कहा भी गया है।

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया

पराङ्मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षणैः ॥
वचोभिरीर्ष्याकलहेन लीलया
समस्तभावैः खलु बन्धनं स्त्रियः ॥ २॥

नरेन्द्र अपना सब कुछ हार बैठा ।कामदेव का बाण केवल नरेन्द्र को ही नही लगा था उसकी चित्तवन में निसिका भी सब कुछ हार बैठी । मैं तुम दोनों को तुम्हारे घर सुरक्षित छोड़ आता हु, तुम खुद को बिल्कुल भी असहज मत समझो । दोनों के मध्य रास्ते भर में आपसी परिचय और प्रेमालाप होता है। बातों- बातों में घर पहुँच जाते हैं।
दोनों ने एक दूसरे से शीघ्र मिलने का वायदा किया।

रात्रि ज्यादा व्यतीत नही हुई थी इसलिए कुटम्ब जनों ने भी राह भटक गई इसलिए कोई दोष नही दिया।

★ ★ ★

कामरान का आतंक

लरकाना में सैनिक चौकी होने के कारण कामरान के सैनिक साधारण जनों के वेश में घूम- घूमकर इस्लाम का प्रचार किया। करते थे । किसी को लोभ से तो किसी को दबाव से तो किसी को भय दिखाकर हर प्रकार से कोशिश की जाती थी की वह अपना धर्मांतरण कर ले । साधारण से साधारण सैनिकों का इस कार्य में हौसला बहुत बढ़ा हुआ था। धर्मांतरण करने वाले मौलाना बादशाहो को दिनभर भ्रम में रखते, उन्हे उल्टी सीधी जैसी बन पड़ती बाते सिखाते और चाँदी कुटते थे । लरकाना में सैनिक चौकी के होते तो फिर भी वे छद्मवेश में बहुधा कम ही आया करते थे लेकिन जैसे ही लरकाना से चौकियाँ हटाई गई जिहादियों के तो पौ बारह पच्चीस हो गए । ठठ के ठठ आकर लरकाना में जमा होने लगे ।

राहगीरों और व्यापारियों का वेश बनाकर हजारों की संख्या में यवन म्लेच्छ वस्त्रों, सामानो में तलवार, तुणीर, जो बन पड़ा वही ला रहे थे । लरकाना में षड्यंत्र रचा जा रहा था । गुप्त रूप से एक बड़ी कार्य योजना को अंजाम दिया जा रहा था । नगरवासियों ने रह- सहकर इसकी सूचना नरेन्द्र को दी की लरकाना में कुछ बड़ा होने वाला है । एक साथ इतने राहगीर व व्यापारी कभी नहीं आए ।

नरेन्द्र को इस कृत्य की सूचना बहुत पहले मिल चुकी थी । वह इंतजार कर रहा था इस षड्यंत्र के मुखिया कामरान के आने का या अल हबीजी स्वयं आए ।

यह नरेन्द्र की दूरदर्शिता का परिणाम ही था की उसने लरकाना से सैनिक चौकियाँ हटवा दी ताकि कामरान के सैनिक छद्मवेश में या सामान्य वेश में निर्बाध रूप से आ सके ।

लरकाना में 2-3 बड़ी धर्मशालाओं में म्लेच्छों ने डेरा डाल लिया था । गुप्त मंत्रणा शुरू हुई । काजी निजाम शेख ने कार्यवाही शुरू की । मेरे बहादुरों, काफिर यहाँ बहुत मात्रा में है या तो उन्हे इस्लाम मानने पर मजबूर कर दो या जो कुफ्र बीच में आए उसका सर कलम करके गाजी कहलाओ।

इंशा अल्लाह, तुम्हे मैयत के बाद जन्नत अदा होगी । सबके सम्मिलित स्वर एक साथ गूंज पड़े, आमीन !

दूसरी तरफ नरेन्द्र ने सभी सैनिकों को सचेत होकर एकजुट करने का आह्वान किया। युद्ध धर्म की सुदृढ़ नीव पर लड़ा जा रहा था एक तरफ हजारों वर्षो की आस्था व ईश्वरीय भक्ति थी तो दूसरी तरफ हजारों म्लेच्छ यवन।

हथियार ज्यादा से ज्यादा मात्रा में बनाने व एकत्र करने का आदेश दे दिया।

लुहारो की धौंकनिया द्रुत गति से चल उठी । घनो पर पड़ती हथौड़ों की चोट टपाटप पड़ने लगी। आज नरेन्द्र और महामंत्री भवरसिंह के पैर एक जगह टिक नहीं रहे थे। दोनों कभी सैनिक छावनी में जाकर सैनिकों को व्यूह रचना समझाते तो कभी शस्त्र शाला में जाकर। निरीक्षित करते हथियार कितनी मात्रा में बने है।

सारी रात दोनों ने जागते हुए और इधर उधर व्यवस्था को देखते हुए बिताई।

दूसरा दिन

पहले दिन कार्ययोजना के अनुसार निजाम शेख के कहे अनुसार म्लेच्छ सैनिक घूम- घूमकर अपना यत्न करने लगे।

दूसरी तरफ नरेन्द्र ने कुछेक सैनिकों को चौकी पर महामंत्री भंवर सिंह के साथ रुकने का आदेश देकर बाकी सैनिकों को लेकर सूर्योदय से बाघ तलाई से लरकाना की तरफ प्रस्थान किया । राह में जाफराबाद पहुंचते- पहुंचते सूर्य उदय हो गया। लरकाना कुछ ही दूरी पर था। गुर्जर ग्वाले इस अप्रतिम योद्धा का स्वागत सत्कार करने राह में ही खड़े थे।
विजय तिलक लगाते हुए निसिका ने कहा जल्दी आना और तलवार भेंट करते हुए कहा इस असि से म्लेच्छों का शिरोच्छेदन करना है।

ताकि इस पावन पुण्यमयी भूमि पर फिर कोई आक्रांता हिन्दुओं को आतंकित ना करे वहा खड़े अन्य लोगो ने भी अपनी सामर्थ्य से राह के लिए जो कुछ बन पड़ा रसद दिया।

मध्याह्न के पूर्व लरकाना पहुँच कर सबसे पहले नगरवासियों को जो मिलता उसको घर में ही रहने का आदेश दे दिया। नगर से बाहर निकलने के सभी द्वार बंद करवा दिए गए। एक द्वार बंद हुआ, दूसरा द्वार बंद हुआ। धड़ाधड़ नगर के सब घरों के द्वार एक साथ बंद होने लगे। म्लेच्छों की समझ में पहले- पहल तो कुछ आया नहीं। जब उन्हें समझ में आया की हम घिर चुके है तथा भागने के सभी रास्ते बंद हो चुके है। तो सब अपने- अपने हथियार लेकर दौड़े। दोनों पक्ष के योद्धा आमने सामने थे। एक तरफ के अपनी संस्कृति और धर्म को बचाने आए थे। दूसरे पक्ष के योद्धा धर्म को क्लांत करने आए थे। मानवता में विष घोलने आए थे। एक तरफ अल्लाह हू अकबर के नारे गूंजे तो दूसरी तरफ से हर- हर महादेव का रणघोष हुआ।

तलवारे म्यान से बाहर आ चुकी थी।

रणसिंघे फूके गए।

म्लेच्छों की संख्या चार गुना थी। कामरान ने आगे आकर मोर्चा सम्हाला। दूसरी तरफ से नरेन्द्र आगे आया। म्लेच्छ सैनिकों का संख्या अधिक होने से हौसला बढ़ा हुआ था। दोनों तरफ के योद्धा एक दूसरे से जूझ गए। मार काट होने लगी। ये मरा, घप..... । तलवारे और बरछिया अपना काम कर रही थी। युद्ध में सैकड़ों हाथ अपना रण कौशल दिखा रहे थे। नरेन्द्र कामरान के एक- एक सैनिक को गाजर मूली की तरह काट रहा था। अभी तक उसने स्वयं को एक भी घाव नही लगने दिया था। उसके रण कौशल पर शत्रु पक्ष के सैनिक और उनका सिपह सालार कामरान हतप्रभ था। शत्रु पक्ष के सैनिकों की संख्या बराबर ही रह गई थी। निजाम शेख और कामरान ताड़ गए की अब बात नही बनने वाली। जान बची सो लाखो पाए। मौका पाकर दोनों आँखों में धूल झोंककर भाग गए। अचानक

पीछे से तलवार का एक घाव नरेन्द्र को लगा। पीछे खड़ा म्लेच्छ कुटिल हँसी हँस रहा था।

नरेन्द्र ने बात की बात में उसका सर तलवार से काट दिया। जख्म बहुत गहरा था। आँखों के आगे कालापन छाने लगा था। नरेन्द्र के घायल होते ही सैनिकों का हौसला टूटने लगा था। नरेन्द्र ने आखिरी बार अपने सैनिकों को संबोधित किया की म्लेच्छ सैनिकों की संख्या अब तुमसे आधी भी नही रह रही अगर इस समय हौसला हार जाओगे तो फिर ये आतताई आयेंगे। बोलते बोलते नरेन्द्र बेहोश हो गया। सेना में आखिरी हर-हर महादेव का स्वरनाद गूंजा। सैनिकों ने बचे कूचे यवन म्लेच्छों को मारकर विजय सिंहनाद किया।

जीत के बाद

विजय सिंहनाद करती कंध कोट की सेना बाघ तलाई स्थित चौकी पर पहुँची। रास्ते में सैनिकों का भव्य स्वागत किया गया। युद्ध स्तर पर हालांकि यह कोई बड़ा युद्ध तो नहीं था किंतु सामरिक दृष्टिकोण से और अपूर्व तैयारी के बिना युद्ध का महत्व कई गुना बढ़ गया था। अगर यह मौका हाथ से जाने दिया होता तो म्लेच्छ संपूर्ण भूमि को कब का आक्रांत कर चुके होते। नरेन्द्र अभी तक घायल ही था। एक घोड़े पर लदा हुआ, मुँह जीन की तरफ लटका हुआ था। साथियों ने सहारा देकर घोड़े से उतारा। निसिका को जैसे ही घायल अवस्था में होने का समाचार प्राप्त हुआ, वह अपनी सखी तारा को लेकर झटपट बाघ तलाई आई। प्रेम अंधा होता है मनुष्य लोक लाज को त्यज देता है। प्रेमी और उसके प्रेम के अलावा सकल जगत अदृष्टिगोचर होता है।

नरेन्द्र बेहोश पड़ा हुआ था। महामंत्री भंवरसिंह इधर- उधर बैचेन होकर घूम रहे थे। जीवक वैद्य दवा दारू कर रहा था। दवा धीमी थी या असर नही दिखा रही थी कुछ कहा नहीं जा सकता था। निसिका ने जैसे ही सैन्य कक्ष में प्रवेश किया पहरेदारों ने पहचान लिया। काफी देर तक निसिका, भंवरसिंह प्रतीक्षा करते रहे की नरेन्द्र होश में आ जाए। किंतु अभी तक होश नही आया था। निसिका ने अपने हाथों से नरेन्द्र को पीठ के बल थोड़ा सा उठाकर उसके गण्डस्थल (कनपटी) को चूमा। पीठ पर कोमल उँगलियों के स्पर्श और कान के पास गर्म सांसों के छुअन से नरेन्द्र में थोड़ी सी चेतना लौटी। जो काम जीवक वैद्य की जड़ी बूटियाँ नही कर पाई वो काम एक प्रेयसी के सुखद स्पर्श ने कर दिया। लेकिन वो अभी तक बेहोश पड़ा था। भंवरसिंह रह- रहकर बैचेन हो रहा था।

वह प्रतिक्षारत था की कब नरेन्द्र को होश आएं।

कुछ देर बाद होश आया। सबके कुम्हलाए मुख कमल एक साथ खिल उठे। कराहते हुए जख्मों के साथ नरेन्द्र उठ खड़ा हुआ। अभी आपको आराम की जरूरत है गुर्जरेश्वर। कुछ दिनों तक मरहम पट्टियाँ

बराबर चलती रहीं जिससे नरेन्द्र का स्वास्थ्य लाभ शीघ्र हो गया और जख्म भर गए।

आज नरेन्द्र पूर्ण रूप से स्वस्थ्य होने पर कंध कोट जा रहा था, साथ में महामंत्री भंवरसिंह। एक छोटी सी रियासत के सूबेदार ने अपने से 4 गुना बड़ी सेना को हराया था वो भी अपूर्व तैयारी के बिना इसलिए महाराज प्रवर्सन ने शिल्पकारों, बढ़ईयो को, भूमि खोदनेवालो को, बुलाकर आदेशित किया राज्य में सड़क, राजमार्गो की सुदृढ़ व्यवस्था का इंतजाम करने का हुक्म दिया। शहर के मुख्य मार्गो पर रंगोली से नगर को सजाया गया। जगह- जगह तोरण व बंदनवार लगाए गए। रंगशालाओ को सजा दिया गया। कुशल नृत्यांगनाओं को नृत्य के लिए आमंत्रित किया गया। पाकशालाओं में विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करवाए गए। ऐसा अपूर्व और भव्य स्वागत कंध कोट के ना तो किसी राजा का हुआ था और ना ही राजकुमार का। किंतु नरेन्द्र आज कंध कोट की पताका का लोहा चारो दिशा में मनवाकर आया था। नगरवासियों में बड़ा उत्साह था। केसरिया रंग की पताका उन्मुक्त गगन में लहरा रही थी। क्या नर, क्या नारी, क्या वृद्ध, क्या बच्चे रह सहकर आज सबकी जबान पर एक ही नाम था। म्लेच्छों को मार भगाया। नगरवासियों का यह भारी उत्साह देखते ही बन पड़ता था। जैसे ही नरेन्द्र, महामंत्री भवरसिंह और राह बाट के सैनिकों के साथ नगर में प्रविष्ट हुआ नगरवासियों में बड़ा कोलाहल हुआ। शंख, दुंधुभी बज उठे। नगाड़े पर दनादन चोट पड़ने लगी। सड़क के दोनों और लोगो का हुजूम उमड़ने लगा। नगरवासियों ने पुष्प वर्षा आरंभ की। बड़े से बड़ा बुजुर्ग भी आज इस 24- 25 वर्ष के तरुण की वीरता के सम्मान में नतमस्तक था।

स्वागत सत्कार नगर की सड़को से राजदरबार तक पहुँचा। राजदरबार की तो आज शोभा ही भव्य थी। सोने की जरी लगाकर एक अलग से सिंहासन तैयार करवाया गया था। महाराज ने आलिंगन करते हुए नरेन्द्र को मस्तिष्क को चूम लिया। सभा सन्नद थी। कुछ देर के लिए सब कुछ ठहर सा गया था। नरेन्द्र का अनेकों अनेक प्रकार से स्वागत

सत्कार किया गया। स्वागत सत्कार के बाद दरबार की कार्यवाही शुरू की गई। महामंत्री भंवरसिंह ने सभा को संबोधित करते हुए कहना शुरू किया " राज्य के शासन संचालन की आधारभूत कड़ी मंत्रियों, सेनापति, खजांची व बैठे हुए विभिन्न सामंतो नरेन्द्र ने बहुत थोड़े समय में कंधकोट की प्रतिष्ठा को उच्चतम स्तर पर पहुँचा दिया है। आज हर रियासत हमारे साथ रिश्ता जोड़ना चाह रही है। जब म्लेच्छ इधर की तरफ पैर पसार रहे थे तब नरेन्द्र ने अपनी कुशल रणनीति से उनका अच्छी तरह से इधर से दमन कर दिया है। हमारी चिंता अभी टली नहीं है, गजनी का दैत्य अमीर महमूद अपने घोड़ों की टापों से भारत को सोलह बार रौंदा है। मैं तो ऐसे दैत्य का भरोसा नहीं करता, क्या पता वह सत्रहवा आक्रमण भी कर दे, इसलिए हमे एक सुदृढ़ व युद्ध विशारद और कुशल सेनापति की आवश्यकता है और दूर सुदूर तक जहाँ तक हमारी निगाहे जाती है नरेन्द्र से बेहतर इस कार्य के लिए अन्य कोई योद्धा दृष्टिगोचर नही होता "।

महामंत्री की घोषणा के बाद राजगुरु गोपालचार्य ने विधिवत मंत्रपूजन सहित सेनापति के पद पर नरेन्द्र को अभिसिक्त किया। पद पूजन की प्रतिष्ठा के बाद चारण-भाटों ने प्रशंसा के कसीदे पढ़े।

थोड़े दिन में नरेन्द्र के रण कौशल व वीरत्व के चर्चे दूर- दूर तक फैल गए, जिससे अछूता भारतवर्ष का शायद ही कोई कोना हो।

जिससे इस वीर के सम्मान में बड़े-बड़े नृपतियों का सिर ससम्मान झुक जाता था।

★ ★ ★

अलबरूनी की भारत यात्रा

अलबरूनी महमूद का एक राजनैतिक कैदी था । उसके देश ख्वारिज्म को महमूद गजनवी ने अपने घोड़ों की टापो से रौंदा था । उसके नागरिकों को खुले में मंडी लगाकर गुलामों को फल- सब्जियों की भांति बेचा था । जब एक देश का शासक दूसरे देश पर आक्रमण करता था तो उसका आक्रमण केवल राजा या नागरिकों तक ही नही होता था, उसका आक्रमण होता था उस देश की सभ्यता व संस्कृति भी । नष्ट केवल राजा या सभ्रांत नागरिक ही नही होते थे, नष्ट होती थी वहा की संस्कृति भी ।

ख्वारिज्म के कैदियों में अलबरूनी सर्वप्रमुख था । उसकी विद्वता व योग्यता को ध्यान में रखकर उसे राजदरबार में स्थान दिया गया । राजदरबार में होने पर भी वह स्वतंत्र नही था । उसपर कुछ प्रतिबंध थे, वह राजनैतिक कैदी था। अलबरूनी भारत आया क्योंकि वह भारत की संस्कृति से काफी प्रभावित था । वह भारत में विद्वेषिता के भाव से नही आया था वह भारत में आया था हिंदुओ की संस्कृति से प्रभावित होकर । वह भारत में आया था दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत को सीखने। वह भारत में आया था भारतीयों की सहिष्णुता के बारे में जानना। जिसको अलबरूनी ने जाना भी, समझा भी और लगभग निरपेक्ष भाव से वर्णन भी किया ।
अलबरूनी ने भारतीय समाज का तत्कालीन व्यवस्था के हिसाब से सटीक वर्णन किया ।

राज्य व्यवस्था के रूप में वर्णन

पूरा देश छोटे-छोटे राज्यों में बंटा हुआ था जिनमें कभी-कभी आपस में झगड़े होते रहते थे। ये राज्य एक-दूसरे से ईर्ष्या करते थे और लगातार एक-दूसरे के खिलाफ लड़ाई में लगे रहते थे। इनमें मालवा, सिंध, कन्नौज, प्रभास पट्टन और कश्मीर प्रमुख राज्य थे।
भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना लगभग अनुपस्थित थी।

भारतीयों का धार्मिक महत्व

ग्रामीण क्षेत्रों के हिंदू कई देवी-देवताओं की पूजा करते थे। मूर्ति पूजा का प्रचलन था। ब्राह्मणों को हिंदू धर्मग्रंथों को पढ़ने का एकमात्र विशेषाधिकार प्राप्त था।

मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को था।

अलबरूनी के साहित्य में भारतीय कानूनी नियम एवं कानून एवं न्यायिक व्यवस्था की स्थिति-

न्याय पाने के लिए आरोपियों के खिलाफ बिंदुओं का जिक्र करने वाले आवेदन लिखना जरूरी था। न्याय गवाहों पर निर्भर था और गवाही देने से पहले शपथ लेना आवश्यक था। साथ ही मौखिक न्याय की भी व्यवस्था थी।

भारत में आपराधिक कानून बहुत नरम था। गंभीर अपराधियों के अंग काट दिये जाते थे। ब्राह्मणों को मृत्युदंड से छूट दी गई। यदि कोई ब्राह्मण किसी की हत्या कर देता था, तो उसे उपवास, प्रार्थना और दान के माध्यम से पश्चाताप करना पड़ता था। मनुस्मृति का बोलबाला था।

कर प्रणाली अलबरूनी के साहित्य के अनुसार

किसानों को अपनी उपज का छठा हिस्सा राज्य को कर के रूप में देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त प्रत्येक संस्कारो पर कर था। साथ में पशुओं की बिक्री, माल ढुलाई, दूसरे देश में जाना-आना इत्यादि करो के माध्यम से राज्य के वितकोष की व्यवस्था की जाती थी।

भारतीय समाज का सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक वर्णन के अलावा सोमनाथ का वर्णन-

अलबरूनी उपनिषदों से बड़ा प्रभावित था इनको सीखने के लिए संस्कृत का ज्ञान अत्यंत आवश्यक था। संस्कृत के बारे में अलबरूनी के विचार थे की इसका क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। उसमें एक ही शब्द के मूल,

व्युत्पन्न प्रयुक्त शब्द व इसका शब्दकोश विस्तृत है। एवं उच्चारण किए जाने पर यह सुमधुर और हृदय को शीतलता पहुँचाने वाली है।

संस्कृत के अध्ययन के लिए अलबरूनी ने पंडितो की सहायता ली व और अपनी तीक्ष्ण मेधा शक्ति से उपनिषदों का अरबी भाषा में भी अनुवाद किया।

उसके सीखने की ललक इतनी ज्यादा थी की वह थोड़े ही प्रयास में बहुत कुछ सीख जाता था।

सोमनाथ का अलबरूनी द्वारा अपनी यात्रा में वर्णन

भारतीय साहित्य की सरिता संगम में अलबरूनी तरने आया था। वह 1016 से 1022 ई० तक भारतीय मनीषियों के संपर्क में रहकर यहाँ की सभ्यता व संस्कृति का अध्ययन किया। सोमनाथ का वर्णन करते हुए अलबरूनी लिखता है बूतपरस्त हिन्दू सोमनाथ की पूजा करते है।

जिसमे शिव के एक लिंग का पूजन करते है। इस मंदिर के लिंग उनके देवता जिन्हे वे कृष्ण कहते है की सत्यमंतक मणि का होना बताते है जिसके होने से वहा किसी चीज की कमी नही होती एवम यह शिवलिंग हवा में तैरता रहता है। प्रभास पट्टन नगर की शोभा इतनी बड़ी हुई है की मंदिर के कलश सोने से बने हुए है। मंदिर के गर्भगृह की दीवारों में भी सोना लगाया गया है। शिवलिंग के अलावा अन्य बूतो की खिदमत करने के लिए बनाए गए चंवरो में भी बेशकीमती हीरा- मणिक जुड़े हुए है। मंदिर में चढ़ने वाले तबर्रुक से इतनी बरकत होती है की पाटन का जर्रा- जर्रा सोना उत्पन्न कर देगा। हिंदुस्तान का कैसा भी बड़ा सुल्तान हो उसके रुक का लाज़िम (सर झुक जाता है) होता है।

सोमनाथ के नाम पर वे सैकड़ों- हजारों एक बादशाह खिदमत के लिए सजदे में साथ झुक जाते हैं।

महमूद ने सोमनाथ का वर्णन अपनी भारत यात्रा के तुरंत बाद किया जिसको पढ़कर महमूद उतावला हो गया।

फाल्गुन बदी त्रयोदशी

सोमनाथ पट्टन में फाल्गुन बदी त्रयोदशी का दिन था । सूर्य नारायण अपनी प्रखर किरणों के साथ उदित हो रहा था । महालय की स्वर्ण जड़ित दीवारों पर सूर्य का पीला प्रकाश इस कांति से शुभोभित हो रहा था मानो सैकड़ों सूर्य महालय की दीवारों पर झिलमिला रहे हो । विभिन्न देशों के पथिक अपना राह बाट का सामान लेकर दर्शनार्थ आए थे । आज प्रभास पाटन की सड़को पर चहलकदमी बहुत ज्यादा थी । विभिन्न देशों की पगड़ियाँ, विभिन्न देशों की वेषभूषाये, विभिन्न संस्कृतियों का संगम आज प्रभास की सोमनाथ रूपी वैतरणी में एक साथ तर जाने को एकत्रित हुए थे। कोई चीज उनमें समान थी तो वह थी देवाधिदेव सोमनाथ के प्रति आस्था । महालय परिसर से जमावड़ा शुरू होकर वेरावल बंदरगाह तक बढ़ता ही जा रहा था । महालय के अंतः कोट से हाट बाजार सुव्यस्थित किए गए थे । बाजारों के लगने से राज्य के खजाने की अप्रत्याशित वृद्धि हुई थी । बाहर से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर जुर्माना था जो उसे राज्य में उनके प्रवेश पर लिया जाता था । जिसको सामान्य रूप से चुंगी कर नाम दिया जाता था ।

मंदिर परिसर में जगह-जगह व्यापारियों के ठठ आपस में अपने देश की बाते बतला रहे थे । कोई सुखी भाव से महालय में केवल दर्शन लाभ करने की इच्छा से आ रहा था तो कोई दुःखी भाव से अपनी मनः कामना की पूर्ति के लिए आ रहा था । कोई- कोई अपने इष्ट देव के लिए निर्माल्य ला रहा था ।

विज्ञ पाठको को निर्माल्य शब्द का अर्थ समझने में कुछेक को मुश्किल आ रही होगी इसलिए निर्माल्य शब्द के अर्थ पर आगे बढ़ने से पहले थोड़ी सी चर्चा होगी

उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वमनं शवकर्पटम् ।
काकविष्ठासमुत्पन्नाः पञ्चैतेऽतिपवित्रकाः ॥

निर्माल्य संस्कृत शब्द है। देवता को चढ़ाये गये, देवता को धारण कराये गये पुष्प, पुष्पमाला,नैवेद्य इत्यादि को देवता के विसर्जन, पूजा समाप्ति के उपरान्त उतारे जाने पर वे निर्माल्य कहलाते हैं एवं मनुष्यों, देवता

के गणों एवं देवपूजकों एवं भक्तों के द्वारा ग्रहण करने योग्य होते हैं। जगन्नाथ स्वामी को पूजा, अर्चना के बाद उनकी विदाई या प्रस्थान के बाद उसी क्षण उन्हें अर्पित नैवेद्य आदि द्रव्य निर्माल्य कहलाता है।

सुबह से शाम हो गई। आगंतुक श्रद्धालु कुछ तो लौट गए तथा कुछों ने धर्मशालाओ की और आश्रय लिया। गणपति मंदिर के ठीक सामने नौबतखाना था जहा चौघड़ियो की प्रहर भर में आती आवाज निस्तब्धता को तोड़ने के लिए पर्याप्त थी। सभामंडप में यात्रियों का जमावड़ा होना शुरू हो गया था। कुछ देर बाद सांयकालीन आरती शुरू होनी थी। सभामंडप के ठीक सामने वाले मुहाने पर बाण स्तंभ बना हुआ था जो दिशासूचक यंत्र की तरह काम करता था। दक्षिणी ध्रुवीय, और उतरीय ध्रुवीय। बाण स्तंभ को सिरे को समुद्र की लहरे आकर स्पर्श किया करती थी। बाण स्तंभ से दक्षिणी मुहाने तक सुदूर जहा तक निगाह जाती थी रत्नाकर की अशेष अगाध जलराशि समूह के अलावा कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता था।

आरती करने के पूर्व नौबतखाने में सूचना के लिए चौघड़िया एक साथ बज उठी। धक्का पेल शुरू हो गई। सब कोई आगे आने को आतुर थे। भीड़ में से एक तरुण बाहर आया और आगे जगह बनाकर लग गया। उनके बगल में महामंत्री भंवरसिंह ने आकर कहा नरेन्द्र इस बार निर्माल्य तो भूल गए। शिव- शिव इतनी बड़ी गलती को सोमनाथ देव कैसे क्षमा करेंगे भंवरसिंह ?

तभी महाराजा भीमदेव भी अपने सेनापति बालुकराय, मंत्री विमल व दामोदर मेहता के साथ दर्शनार्थ को आ जाते हैं। सबका ध्यान सोमनाथ पर। तभी गंग सर्वज्ञ अपने पट शिष्यों शिवराशि व रूद्रभद्र के साथ आकर आरती करते है।

रुद्री पाठ के एकाकी सम्मिलित स्वरो से पाटन का कोना-कोना गूंज जाता है।

आरती समाप्त होने के बाद सबने हाथों को आगे लाकर दिये की जलती लौ पर जाकर हाथों को आँखों व मस्तिष्क पर ले जाकर आरती ली।

जय सोमनाथ, जय सर्वज्ञ का सम्मिलित स्वर एक साथ गूंज पड़ा।

गंग सर्वज्ञ आगे आएं। नरेन्द्र ने झुककर गंग सर्वज्ञ के चरण स्पर्श किए। सर्वज्ञ ने उठाकर छाती से लगा लिया। नरेन्द्र सुना है इस बार तुमने महान उद्योत करते हुए कामरान के सैनिकों को खूब छकाया है।

हा गुरुदेव ! नरेन्द्र ने सर्वज्ञ की प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा।

किंतु मैं तो निमित्त मात्र हु यह सब तो देवाधिदेव महादेव मुझसे करवाना चाहते है। वे नहीं चाहते की कोई मलेच्छ अपने आतंक से हिन्दुओं को आतंकित करे।

किंतु हिंसा क्या अच्छी है ? वत्स !

क्या देव सोमनाथ पसंद करेंगे की उसका भक्त हिंसा फैलाए ? देव तो सनातन समय से देवताओं और दानवों दोनों के आराध्य है जो उनमें भेद करे वो मूर्ख ही है।

देव के भक्तो को आतंकित चाहे कामरान करे या अल हबीजी। करे वो अपनी करनी का फल स्वयं भोगेंगे।

देव उन्हें स्वयं दंड देंगे। तुम हिंसा क्यों करते हो ? वत्स !

नरेन्द्र ने इस समय उत्तर देना उचित ना समझा,

गंग सर्वज्ञ से लंबी बहस करने का कोई औचित्य नहीं था। जैन मुनियों के प्रभाव के कारण अहिंसा की भावना उनके मन में उस समय कुछ ज्यादा ही बलवती थी।

इसलिए वह चुप ही रहा।

गंग सर्वज्ञ आरती करके एकचित होकर बैठ गए।

महाराजा भीमदेव, विमलदेव, बालुकराय, दामोदर मेहता, नरेन्द्र, भंवरलाल उनके पास बैठ गए।

जय सोमनाथ जय सर्वज्ञ का नाद गूंजा।

कामरान फराह रियासत का एक सिपह सालार था। जो अपने हुक्मरान की अल हबीजी की आज्ञा से सामरिक दृष्टि से कमजोर पड़े गांवों में जिनसे सैनिक चौकियाँ दूर हुआ करती थी में धर्मांतरण का कार्य कर रहा था। नरेन्द्र ने इस बार उसके हाथ पड़े सैनिकों को अंग भंग करके छोड़ दिया तथा कामरान मौका-परस्ती पाकर भाग खड़ा हुआ था।

★ ★ ★

चौला का नृत्य

गंग सर्वज्ञ और प्रमुख जन एक जगह चौकी पर बैठ गए। चौला को लाओ, गंग सर्वज्ञ ने गंगा को आज्ञा दी। सोमनाथ महालय में विभिन्न प्रदेश की तकरीबन 600 नर्तकियाँ थी। किंतु उन सब नर्तकियों में गंगा उनकी प्रमुख थी। जब सर्वज्ञ को आचार्य के पद पर प्रतिष्ठित हुए 10-12 वर्ष हुए थे उनकी तीस की उम्र के लगभग गंगा पहली बार देवार्पित की गई थी। गंग सर्वज्ञ के बारे में कहा जाता था की वे एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे किंतु गंगा की हर इच्छा का उन्होंने लगभग पालन किया था।

और आज 35 वर्ष बीत जाने पर भी गंगा उनकी हर आज्ञा का पालन ऐसे ही करती थी जितना वो शुरुआती समय में किया करती थी। दोनों के बीच में रिश्ता कैसा था वो तो ईश्वर जाने लेकिन ये निश्चित था की सर्वज्ञ के साथ एकांतवास के एक भी मौका आज तक गंगा नही छोड़ पाई थी।

चौला को भी गंगा ने अपनी बेटी के सदृश तब से पाला था जब उसको केवल 7 वर्ष की अवस्था से देव निर्माल्य किया गया था। चौला भी गंगा को मां कहती आई थी। गंगा ने चौला को सभी अठारह प्रकार की नृत्य तथा बारह प्रकार की अभिनय विद्या में निष्णात कर दिया था। माँ बेटी का रिश्ता ही कुछ ऐसा था। गंगा ने चौला को अपने नृत्य की इतने वर्षो की साधना सीखाकर पारंगत कर दिया था। उसके घुंघरुओं की थिरकन में वह अपने यौवन के झांझरो की झंकार को पहचान सकती थी जब वह किया करती थी। और उसके घुंघरुओं की एक- एक छन्न-छन्न पर सैकड़ो राजा अपना सब कुछ भूल बैठते थे। आज वही चौला नृत्य करने आई थी।

चौला नृत्य में अपना सब कुछ लगा देना। गुर्जरेश्वर भीमदेव आज तुम्हारा नृत्य देखेंगे, देखना कही कोई चूक ना हो जाए। गंगा ने धीमे से कहा।

नक्कारखाने में नौबत बज उठी। मृदंग पर थाप दी जाने लगी। वीणा ने सप्त स्वर छेड़ दिए। शत सहस्त्र दीपकों का जलता प्रकाश तमस को

बेंधता हुआ चौला के मुख कमल पर छाने लगा। कटिली आंखे, झील सा गहरा भावत्व, गुलाब की पंखुड़ियों के से खिले होंठ, उत्तरीय लोगो की सी ऊपर उठी हुई नाक, बिजली के वेग की तरह लरजाते हाथ, घुंघरू की तरह गतिमान पैर, नख शिख श्रृंगार से युक्त चौला मृदंग की थाप पर नाचने लगी थी। तत छन, ता छै छा छन, झन- झन झा झन झन-झन झन करती मृदंग की आवाज चौला के पैरो में मानो आज बिजली की गति दौड़ गई है। महाराजा भीमदेव एकटक चौला का नृत्य देखे जा रहे है।

घंटे भर बाद मृदंग की थाप रुकी, वीणा के स्वर गतिहीन हो गए। लोग वाह -वाह करते जा रहे है लेकिन चौला के ना तो पैरो में गतिहीनता हुई और ना ही हाथों का संचालन रुका। स्थूल जगत के वाद्य यंत्रों के रुकने पर अंतस के वाद्य चौला के हृदय में झंकृत होने लगे। उसे लग रहा था आज 13 वर्षो की साधना जिस नृत्य को सीखने में उसने लगाई है देव सोमनाथ स्वयं परखने आए है। शाबाश ! रुको चौला सर्वज्ञ ने आवाज लगाई। लेकिन चौला इस भौतिक जगत को भूलकर आज देव को रिझाने के लिए नाच रही थी। नाचते नाचते चौला मूर्छित हो गई।

महाराज भीमदेव ने आव न देखा ताव चौला को उठाकर उसकी कुटिया में लेकर चले गए। वहा उपस्थित पौरजनों में आपसी कानाफूसी होने लगी।

कोई कुछ कहता कोई कुछ।

पौरजनो की कानाफूसी के शब्द जब लोक मर्यादा को पार करने लगे तो नरेन्द्र खड़ा हुआ। तलवार म्यान से बाहर निकाली। समस्त बैठे हुए संभ्रांत व गणमान्य ध्यान से सुने। शरीर की अकुशलता को प्राप्त स्त्री को वैद्यक सेवा के लिए उठाकर ले जाना पड़े और वो अगर स्पर्श हो जाए तो कोई अधर्म नहीं है। अगर अपनी कुत्सित चेष्टाओ के अप्राप्य होने और किसी और को प्राप्य होने पर मिथ्या लांछन अगर किसी ने लगाया तो वह उसका आखिरी लांछन व आखिरी शब्द होगा। इसे मेरी सलाह समझो, चेतावनी समझो या परामर्श। लेकिन ये निश्चित है अगर अगली बार किसी ने लांछन लगाने की कुचेष्टा की तो उसका फैसला मेरी तलवार करेगी। यह कहते हुए उन्होंने तलवार को म्यान में रखी। सभा थर-थर कांपने लगी।

प्रेम की अजस्र वाहिनी

'प्रेम में जब कोई मनुष्य आतायित होता है तो केवल उसका हृदय छिन्न- विछिन्न नहीं होता अपितु उसका गहरा रंग आत्म तक को रंगता है ' । नरेन्द्र निसिका का सब कुछ हर ले गया था । ना हृदय में चैन था, ना पैरो में शिथिलता, ना मस्तिष्क में शांति । निसिका ने अपनी सखी तारा को बुलाकर किसी प्रकार से नरेन्द्र से एक मुलाकात हो इसका प्रबंध करने की गुजारिश की । तारा ने नरेन्द्र से प्रार्थना करके इसका प्रबंध भी कर दिया । चन्द्रमा जब अपनी धवल किरणों से रात्रि के तमस को जब विदीर्ण करेगा उसमे वो मिलेंगे । संध्या का समय हुआ । गायों की खुरो की उड़ती गर्द से जब गोधूली वेला समाप्त हुई, गुर्जर ग्वाले दिनभर की थकान के बाद जब निद्रा के गहन आगोश में खो गए । तब दो परछाईया अलग- अलग दिशाओं से आई । दोनों मिलकर एकाकार हो गई । ऊपर चन्द्रमा अपनी शीतलता बरसा रहा था । मंद-मंद वायु के झोके शांति प्रदान कर रहे थे । दोनों परछाईया एक दूसरे के आगोश में समा चुकी थी, जहाँ अब दोनों मिलकर एकाकार थे । जहाँ दोनों में अहम और परम का कोई भेद नहीं था ।

एक तरफ चन्द्रमा की शीतल चांदनी बह रही थी, दूसरी तरफ दो प्रेमियों के अजस्त्र प्रेम की धारा बह रही थी । जैसे अनंत आकाशगंगा में असंख्य तारे मिलकर एकाकार हो जाते हैं ऐसे ही प्रेयसियो में भी अंतरतम का भेद मिट जाता है ।

प्रेम की इस हिलोरी खाती सरिता की कलकलाहट सर्वत्र फैल गई। प्रेम निष्पाप, निष्काम भी हो तो लोग बाते बनाने ही लगते है । महाराजा प्रवर्सन के हस्तक्षेप से नरेन्द्र और निसिका के मध्य विवाह संबंध सुनिश्चित हुआ ।

कुछ दिनों बाद विवाह हुआ ही था की गजनी के अमीर के आक्रमण की आहट आ पहुँची । ग़जनी का अमीर छद्म रूप से यहाँ रह रहा है ।

इसकी पुष्टि करने के लिए व निर्माल्य के लिए नरेन्द्र को सोमनाथ महालय भेज दिया गया। नवोढ़ा जिसके मेहंदी माहवार का रंग जरा सा भी नही उतरा था उसको छोड़कर जाना पड़ा।

★ ★ ★

निर्माल्य

कार्तिक बदी त्रयोदशी से मेला शुरू हुआ था । आज कार्तिक अमावस्या थी। आज भैरव को समुद्र स्नान के लिए निकाला गया था। वर्ष में ये एकमात्र दिन ऐसा होता था जब भैरव की प्रतिमा को आपाद्मस्तिष्क रत्नाकर के जल में स्नान करवाया जाता था । दुनियाभर के तांत्रिक अपनी क्रियाओं की सिद्धि के लिए तंत्र साधना कर रहे थे। कुछ अपनी साधनाओं के लिए यत्र तत्र मनुष्यो को ढूंढ रहे थे । कार्तिक अमावस्या का यह दिन कापालिको की क्रियासिधि में विशेष स्थान रखता है । भक्तजन भी अपनी मनोवांछित कार्य की सिद्धि के लिए देवताओं के निर्माल्य ला रहे थे। एक युवक द्रुत गामी घोड़ा लेकर सरपट सोमनाथ महालय के अंतः कोट के पास पहुँचा। सूर्य नारायण अपनी लालिमा को समेट चुका था। चन्द्रमा अपनी किरणों के साथ अपना साम्राज्य विस्तारित कर रहा था। युवक महालय के अंत: कोट के पास पहुँचा द्वार बंद हो गए थे । युवक ने झांककर कहा दुर्गपाल को बुलाओ। दुर्गपाल खजानसिंह बाहर आया।

कौन ? नरेन्द्र!

दुर्गपाल ने द्वार खोल दिए।

नरेन्द्र अपने घोड़े को साइड में खड़ा करके महालय के पास पहुँचा।

बाहर एकाध मनुष्य ही नजर आ रहे थे।

महालय से निकलकर सबसे नजदीकी धर्मशाला में पहुँचा, वहाँ अवश्य ही कुछ चहल पहल थी।

नरेन्द्र ने अपने पट वस्त्रों से एक पोटली निकाली, खोलकर देखा और फिर रख लिया तथा किनारे रखकर सो गया।

पास ही में 3 अन्य लोग जो साधु के वेश में थे किंतु चेहरे से दुष्ट प्रतीत हो रहे थे अपने आसन लगाकर सो रहे थे।

अचानक एक सुंदरी और एक तरुण युवक साथ- साथ आए । युवती युवक को छोड़कर जाने लगी तभी उन 3 साधुओं में से एक ने कहा,

कहा लेकर जाता है इसे ? लाओ मुझे दे दे ! मैं तुम्हे इसकी उचित कीमत भी दूंगा। युवक ने तलवार म्यान से बाहर निकाली और उस साधु पर बिजली की तरह टूट पड़ा। दोनों की तलवार चन्द्र रात्रि में खनखना उठी। आसपास भीड़ का जमावड़ा हो गया। दोनों में से कोई भी हार मानने को तैयार नही था। अचानक दूसरा साधु भी अपने साथी का साथ देकर साथ देने के लिए लड़ने आ गया। नरेन्द्र ने जब देखा की एक ही व्यक्ति से दो- दो समतुल्य तलवारबाज एक साथ लड़ रहे है तो वह सिंह की भांति उछलकर गया और उसकी तलवार के एक- एक वार से दोनों की तलवारों के टुकड़े हो गए। अब दोनों मल्ल युद्ध करने लगे। नरेन्द्र ने एक साधु के उठाकर काफी दूर फेंक दिया। इतनी देर में ही भीड़ को चीरते हुए गंग सर्वज्ञ आए।

शांत पुत्रम ! मे पापम ! में प्रतिहिंसनम!

युवक और नरेन्द्र ने झुककर प्रमाण किया।

किंतु साधु अविचल भाव से खड़ा रहा।

वत्स भीमदेव, पुत्र नरेन्द्र चिरंजीवी भव !

सुल्तान महमूद तुम भी आ ही गए।

चिरंजीवी हो वत्स !

जैसे ही महमूद नाम सुना, भीमदेव और नरेन्द्र ने उसकी गर्दन तोड़नी चाही किंतु गंग सर्वज्ञ ने रोक दिया।

महालय सबके लिए है, और देव भी सबके।

कोई शत्रु भाव से आ रहा है या मित्र भाव से वो देव देखेंगे।

* * *

छद्मवेशी सुल्तान

प्रभास पाटन से थोड़ी दूर एक प्राचीन शिवालय था। शिवालय अति जीर्ण शीर्ण अवस्था में था। वहा पर एक संत रहा करते थे। संत प्रायः बोला बहुत कम करते थे। अक्सर कम बोलने वाले लोगो के पीछे भी एक गूढ़ रहस्य हुआ करता है। या तो कम बोलने वाला अतिशय ज्ञानी या उच्च कोटि का विद्वान होता है या कुछ लोग इसलिए भी कम बोलते है की कम बोलने के फायदे से लोग उनके मुँह कम लगे। अमुक व्यक्ति कम बोलता है तो लोग यह घमंडी है ऐसा सोचकर उससे बात ही नही करेंगे। यह संत भी कुछ ऐसे ही विचित्र थे। उनके पास दिनभर लोगो का आना- जाना लगा रहता था। लोग उनसे कुछ पूछने की कोशिश करते तो संत हाथों के इशारों से उन्हें ना बोलने के लिए रोक देता था।

कुछ पंडित लोग इस संत की अजीबो गरीब शक्ल देखकर संदेह भी करते थे की यह शक्ल से हिंदू प्रतीत ना होकर यवन प्रतीत होता है। परंतु लोगो की कम पारखी बुद्धि तर्कशक्ति का उपयोग ना करके केवल वेशभूषा से ही परिणाम तक पहुँचने की वृत्ति ही ऐसी थी।

वह साधु गजनी के सुलतान महमूद का दरबारी विद्वान अब्दुल तालिब था।

उसी संत का एक शिष्य था जो दिन निकलते ही मंदिर के आंगन से निकलकर ना जाने कहा जाता और शाम ढलते ही आ जाता।
दिन में आए हुए लोगो से वह संत इशारों से सोमनाथ के मंदिर, और वहा की व्यवस्था का वर्णन सुनाने को कहता। और भोले- भाले खेतिहर किसान लोग गंग सर्वज्ञ से गंगा तक, दुर्गपाल खजानसिंह से लेकर महाराज भीमदेव तक, विष्णुभद्र से त्रिपुरा सुंदरी का वर्णन जस का तस करते। शाम ढलते ही साधु का शिष्य आया। घोड़े को साइड में लगाकर उसने साधु का हाथ चूमा। उसके पीछे- पीछे एक दूसरा युवक था। कुछ हुआ महमूद, साधु ने जो अब तक मौन था अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा। हा उस्ताद, "आज तो मैं भीमदेव से निपट ही लेता। लेकिन न जाने बीच में कहा से

नरेन्द्र नाम का एक सेनापति आ गया। उसके मजबूत हाथों में इतनी ताकत थी की उसकी तलवार के एक ही वार से मेरी शमशीर के दो टुकड़े हो गए। भीमदेव से तो दो-दो हाथ भी ना होने पाए। उस युवक में जोश और उसकी बोली रोबीली थी। अगर वह नरेन्द्र किसी तरह हमारे साथ हो ले तो मैं उसे कंध कोट के सेनापति की जगह हमारी जैसी किसी रियासत का अमीर मुकर्रर कर दूँ। बाकी रही सोमनाथ माबद (मंदिर) की बात तो उसकी व्यवस्था, प्रसादों, सैन्य व्यवस्था का निरीक्षण अच्छी तरह से कर लिया है। अब हमे किसी तरह यह स्थान छोड़कर जल्द से जल्द चले जाना चाहिए।

⋆ ⋆ ⋆

महालय में तैयारी

जब हाथ लगे दैत्य गजनवी को गंग सर्वज्ञ नरेन्द्र और भीमदेव के हाथों से जाने दिया तो दोनों अधीर हो उठे। नरेन्द्र ने कहा, गुरुदेव ये कैसा अनर्थ हो गया। हाथ आए शत्रु को जाने दिया। वो दैत्य भारत की भूमि को सोलह बार आक्रांत कर चुका है, वह यहाँ थाह लेने आया था। अब वह दैत्य सत्रहवी बार भी आक्रांत करेगा। क्या हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे ? उसने हर आक्रमण में मंदिरों को ध्वस्त किया है । क्या पता इस बार सोमनाथ पट्टन को ध्वस्त करे ?

दोनों की बातों सुनने के बाद गंग सर्वज्ञ ने प्रतिउत्तर दिया, जो तीनों लोको के रक्षक है जो स्वयं शंभू, स्वयंभू, अनादि, अनंत, अपरिमित, अपरिमेय, अगोचर है उस सोमनाथ को दैत्य आक्रांत करेगा क्या ?

महादेव उसे अपने तीसरे नेत्र से जलाकर भस्म नहीं कर देंगे क्या ?

नरेन्द्र बात को काटते हुए कहता है किंतु गुरुदेव देव की क्या ये इच्छा है की हम हाथ हाथ पर हाथ रखकर अपनी मूर्खता का प्रदर्शन करते रहे। देव तो केवल मार्ग दिखाता है प्रयत्न मनुष्य को ही करना पड़ता है। 'देव तो केवल एक पत्थर होता है, किंतु मनुष्यो की आस्था उसमे भगवान की प्रतिष्ठा कर देती है, इस बार यही सोमनाथ पट्टन पर आक्रमण होता है तो यह आक्रमण केवल सोमनाथ पर नहीं बल्कि करोड़ों शिवभक्तों की आस्था पर आघात होगा। हिन्दुओं की पुरातन परंपरा भंग हो जायेगी। स्वयं की मूर्ति का रक्षण देव में नही है, उसके लिए मनुष्य को माध्यम बनना पड़ता है। मूर्ख मनुष्य यही सोचता है की जो देव स्वयं का रक्षण नहीं कर पाए वो किसी और का कैसे करेंगे '।

सर्वज्ञ गंग ने कहा इस समय हिन्दुओं का अहंकार बढ़ा हुआ है, वे जातीयता के नाम पर लड़ते है, एक को श्रेष्ठ तो दूसरे को हेय दिखाने की कोशिश करते है। एक की श्रेष्ठता तथा दूसरे की निम्नता को आक्रांत करके आक्रांताओं ने हर बार अंतर यहीं संदेश दिया है की अंतर तुम स्वयं में करते

हो। बुतशिकनो की नजर में तुम सब काफिर हो फिर चाहे तुम अपने वर्ग में श्रेष्ठ गिने जाओ या निम्न।

नरेन्द्र और भीमदेव युद्ध की पूर्व तैयारी की अनुमति गंग सर्वज्ञ से लेकर जाते हैं।

उसी समय घोघागढ़ी के घोंघा बापा का पुत्र सज्जन चौहान और उसका पुत्र सामंत चौहान निर्माल्य लेकर आए।

दोनों ने सर्वज्ञ को प्रणाम किया । सर्वज्ञ ने आशीर्वाद देकर बातचीत करना शुरू किया। बातचीत के तरीके से लग रहा था की आचार्य गंग सर्वज्ञ बहुत जल्दबाजी में है।

बापा घोंघा को मेरा आशीर्वाद कहना, उनसे कहना की गजनी का अमीर सोमनाथ पट्टन को आक्रांत करने आ रहा है। वह घोघागाढ़ी के रास्ते से अमीर की सेना को आगे नही बढ़ने दे । घोंघा बापा की 90 वर्ष की शिवभक्ति का पुण्यफल कैलाशपति उसे देना चाहते है, वह पुण्यफल देवताओं को भी प्रायः दुर्लभ है । घोंघा बापा ने इस अवस्था तक जिस पराक्रम से अपने कुल गौरव की रक्षा की है उसी प्रकार सोमनाथ की रक्षा करे। अभी अमीर को आने में पन्द्रह दिन तो लग जायेंगे तो तुम द्रुतगति से जाकर घोघाबापा को मेरा संदेश दो।

आचार्य सर्वज्ञ का संदेश पाकर सज्जन चौहान ने अपने बेटे सामंत को कहा की मैं मेरी ऊँटनी से जालोर के रास्ते जाता हु तुम दूसरे रास्ते से जिससे हम आए थे जाओ, क्योंकि जालोर वाला रास्ता तुम्हारे लिए अनजान, मैं तुम पर कोई खतरा नहीं आने देना चाहता इसलिए तुम दूसरे रास्ते से जाओ।

पिता की बात सुनकर सामंत बोला, बापू ! क्या आपने मुझे बच्चा समझ लिया, मैं इस मुसीबत में आपको छोड़कर बिल्कुल भी नहीं जाऊंगा।

तू बात को समझ सामंत सज्जन बोला, देख ! हम दोनों में से एक का तो इस अलग रास्ते से जाकर संदेश देना जरूरी है। क्या पता हम दोनों

एक ही मार्ग से जाए और अमीर की सेना या कोई और मुसीबत मिल जाए और आचार्य सर्वज्ञ का संदेश पहुंच ही ना पाए तो।

इसलिए बेटा मैं कहता हु तुम इस रास्ते से जाओ।

अनमने मन से सामंत चला गया। सज्जन चौहान उसे तब तक देखता रहा जब तक वह आँखों से ओझल ना हो गया।

* * *

अमीर महमूद का गजनवी दरबार

आज गजनवी में चहल पहल बहुत थी। धर्मशालाओं, मस्जिदों में टोलियो की भरमार थी। देश विदेश के मुल्ला- मौलाना जुटे हुए थे। सुदूर पहाड़ी इलाकों के लुटेरे सरदार भी अपने दल- बल के साथ गजनी में आ रहे थे। गजनी के उठाईगिरे, चोर-उचक्के, बदमाशो का जमावड़ा लगा हुआ था। शराबखानों, नाटकघरों व तवायफघरों में इनके ठट के ठट उमड़ रहे थे। शहर के उमराव, जमादार, पठान, बलूची तुर्क लडको को चटकीली रंग बिरंगी पोशाकों में पहनाकर उनके साथ घूम रहे थे। इन लडको को बचपन में ही हिजड़ा बना दिया जाता था। इन लडको को पठान और उमराव अपने साथ रखने और घुमाने फिराने में अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न समझते थे। ये लड़के शहर की सफील के पास शाम होते ही उमड़ जाते थे इनके मलामत से अमीर के खजाने की लुतफ थी।

शाम होते होते रंगशालाओं, उमरावो के महलों में नाच रंग व तमाशो की भरमार थी। आज गजनी के प्रत्येक बड़े मकान व धर्मशाला ने छावनी का रूप ले लिया था। जिनमे हर कोई अलग- अलग मकसद से आ रहा था। चन्द्रमा अपने शबाब पर था।

आफताब तालुअ हुआ। मौलानाओं ने फजर की नमाज अदा की। आफताब की जिया से गजनी का जर्रा जर्रा रोशन हुआ। इसी रोशनी की शहंसाई में अमीर की सवारी निकली। अमीर के आगे- आगे नंगी तलवार लिए तुर्क सवार अपने घोड़े पर चले। सुल्तान की अतफ से सड़क के सड़क के दोनों ओर खड़े लोगो को पैसे निसार किए गए। अमीर की सवारी अब उसके दरबार में पहुँची।

एक भव्य मनसद पर अमीर जाकर बैठ गया। जिसकी जड़ाव में बेशकीमती नगीने लगे हुए थे। उसके वजीर, उमराव, सिपहसालार, महंगी कालीन पर बैठे हुए थे। छतो के निचले हिस्से में महंगे फानूस लगाए गए थे।

खिदमतगारिकाएं पँखे से हवा झल रही थी। तांबुली पान-चुन्ना लगा रही थी। दरबार खचाखच भर गया था। सदस्यों की संख्या अधिक होने

पर कालीन और जाजम को बाहर बिछाकर कुछ सदस्यों को बाहर बिठाया गया। कार्यवाही शुरू हुई, सरेबज्म महमूद खड़ा हुआ। अय मेरे दोस्तो ' मैं खुदा का बंदा महमूद, तुम सबका इस्तकबाल करता हु। दोस्तो तुम सब सरेदस्त अफ़गान के कोने-कोने से सरीही तौर पर इक्कठा हुए हो। तुम सबने हर बार हिंदुस्तान को अपनी घोड़ों की टापो से हर बार मेरे साथ रौंदा है। और वहा से बेशुमार धन दौलत को मेरे साथ अपने घोड़ों की जीनो पर भरकर लाए हो।

एशो आराम में तुम सबकी वह असबाब धनो और- दौलत खत्म होने को है। अलबरूनी के वाकयो से मैने हिंदुस्तान की सरजमीं पर एक माबद (मन्दिर) के बारे में सुना है। बूतपरस्त लोग जिसे सोमनाथ कहते है। वहा अकूत संपत्ति है। अभी तक तो जितना सुना है उसके हिसाब से जितनी लूटमारी हमने 16 बार के हिंदुस्तानी आक्रमण में नही की उससे ज्यादा संपत्ति है प्रभास पाटन में। 'मैं खुदा का बंदा महमूद वही कहूंगा जो मुझे कहना चाहिए, वही करूंगा जो मुझे करना चाहिए '। इस्लाम में बुतपरस्ती हराम है। काफिर लोग माबंदो में बेशुमार धन दौलत रखते है। मैं महमूद फराद की तरह बुतो को तोड़कर गाजी कहलाना चाहूंगा। पिछले सोलह आक्रमण में जितनी बूते हमने तोड़ी है यह 17 वा सोमनाथ पर आक्रमण उन सबकी मान मर्यादा के सामने हमारी मान मर्यादा को और बढ़ा देगा।

दोस्तो तुम सबने अपनी शमशीरों से काफिरों के सिरों को युद्ध की भेंट चढ़ाया है।

तुम्हारी तलवार फिर से खून की प्यासी है, काफिरों के लोहु से इसकी प्यास बुझाओ।

अमीर के इस खुतबे से वहा मौजूद पठानों व तुर्को में आवेश आ गया। व उन सबने एक ही स्वर में कहा अमीर सुलतान हम सब तुम्हारे साथ है। तुम तो हिंदुस्तान की सरजमीं पर चढ़ाई की तैयारी करो।
सुलतान ने अपने सिपह सालार मलिक आयाज को बुलाकर आदेशित किया की सब तैयारी हो जाए।

अगले माह हम कूच करेंगे।

* * *

महमूद गजनवी का आक्रमण के लिए प्रस्थान

महमूद गजनवी ने जब सोमनाथ पट्टन पर आक्रमण की शपथ ली तो यह बात सर्वत्र फैल गई ।

हजारों की संख्या में तुर्क और बलूची पठान आ- आकर गजनी में जुटने लगे। यह महमूद का सबसे कठिन अभियान था। सोमनाथ आक्रमण करने में उसे कितनी राज्य की तलवारो से लोहा लेना पड़ेगा यह भी उसे मालूम नही था। महमूद अपने तुर्क सवारों और बलूची पठानों के साथ गजनी से चल पड़ा। रास्ते में विकट रेगिस्तान के सफेद रेत के सिवाय कुछ नजर नही आ रहा था। मश्को पर पानी भरकर ऊंटो पर लाद दिया गया, रसद की सामग्री घोड़ों पर लाद दी गई। सिंधु महानदी के तट को इस योद्धा ने देखते ही देखते पार कर लिया। अब अमीर के पास केवल 2 ही रास्ते थे या तो वो मुल्तान के रास्ते प्रवेश करे या फिर कंध कोट के रास्ते प्रवेश करे। कंध कोट के रास्ते प्रवेश करना अमीर खतरे का सूचक समझता था। वहाँ नरेन्द्र अपने तीस हजार गुर्जर योद्धाओं के साथ तलवार लिए अमीर के स्वागत में खड़ा था। नरेन्द्र की ताकत और युद्ध कौशल का अंदाजा महमूद देख चुका था। उसकी तलवार के हाथों वह पानी पी चुका था, उसके रण कौशल से वह पराजित हो चुका था। हालाँकि अमीर के सेना में सैनिकों की संख्या 60000 से अधिक थी फिर भी वह कंध कोट के रास्ते जाने से डर रहा था। इसलिए अमीर ने मुल्तान के रास्ते ही राह पकड़ी।

मुल्तान में चौहान शासक अजयपाल का शासन था। अमीर ने अपने एक दूत को चौहान शासक अजयपाल के दरबार में मैत्री संदेश लेकर भेजा।

"मुल्तान के शासक अजयपाल को गजनी के सुलतान का आदाब, हम मुल्तान के रास्ते सोमनाथ जा रहे है, आपके बुजुर्गो से हमारे बुजुर्गो के संबंध अच्छे थे इसलिए हम आपसे युद्ध करके रक्तपात करना नही चाहते। सुल्तान की आपसे इल्तजा है की आप उन्हें राह दे दीजिए। अन्यथा राह दोस्ती के बजाय खून खराबा हो गया तो इसकी कीमत मुल्तान

की बज्म को चुकानी पड़ेगी। अगर आप रास्ता दे देते हो तो हम आपके साथ वही सलूक करेंगे को एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है। अजयपाल महमूद गजनवी की ताकत से परिचित था इसलिए उसने खून खराबा करने के बजाय रास्ता देना ही मुनासिब समझा। अजयपाल ने पत्र के जवाब में लिख भेजा की हम अमीर को रास्ता और सहायता दोनों देने को तैयार है किंतु अमीर हमे हमारे नगर को ना लूटने का तथा मंदिरों को ना तोड़ने का वचन दे तो।

अमीर ने जवाब में लिखा मंदिरों को तोड़ने की प्रवृति रही है। लेकिन मैं मेरे दोस्त को आश्वस्त करता हु की तुम्हारे राज्य के सिर्फ एक मंदिर को तोड़कर मैं बुतशिकन (मूर्तियों को तोड़ने वाला) की प्रतिष्ठा को बरकरार रखूंगा। तथा नगर को ना लूटकर नगर के कुछ समृद्ध व्यापारियों से कर वसूल करूंगा। इस प्रकार समझौते के अनुसार अमीर की सेना मुल्तान में आ डटी। नगर के व्यापारी डरते-डरते अमीर के पास कर देने पहुँचे।

अमीर ने सारी प्रक्रिया पूरी होने के बाद अजयपाल को कहा घोघागढ़ के घोघा बापा आपके परिचित और रिश्तेदार है, आप उन्हें खत लिख भेजिए की मुझसे दोस्ती करके अपनी आन बढ़ाए, और सुलतान को मरुस्थली से रास्ता दे।

★ ★ ★

विष्णुभद्र

सोमनाथ महालय वाले अंतः कोट में सोमनाथ महालय के अतिरिक्त सबसे अधिक आकर्षण का केंद्र था त्रिपुर सुंदरी। त्रिपुर सुंदरी के मंदिर के मुख्य दरवाजे पर भैरवी चक्र बना हुआ था। मंदिर का मुख्य दरवाजा जहा था उससे काफी दूर मंदिर की परिधि का कोटा था। चारो तरफ एक बीस हाथ ऊंची दीवार खड़ी थी जिसमे एक छोटे से किवाड़ से प्रवेश लेकर तंग और टेढ़ी मेढी गलियों से होकर त्रिपुर सुंदरी के मंदिर में जाया जा सकता था। साधारण जन वहा पर नियमित रूप से जाने पर डरा करते थे। क्योंकि वहा पर साममार्गीय क्रियाओं की अतिश्यता थी। मंदिर के चारो तरह एक परिक्रमा पथ बनाया हुआ था लेकिन परिक्रमा पथ के बीच में एक छोटा सा दरवाजा जिसमे झुककर ही जाया जा सकता था, बना हुआ था। दरवाजे के अंदर था अघोर क्रियाओं का रहस्य। जहाँ पर दिन में जाने पर भी डर लगता था, रात का तो फिर कहना ही क्या ?

नरेन्द्र सोमनाथ महालय की सीढ़ियों के नजदीक बैठा हुआ था। दीपधारो में जलते हुए दीपक अपने स्वर्णिम आभा से युक्त प्रकाश से महालय की दीवारों को हेममय कर रहे थे। पीठ पर किसी कोमल हाथों का स्पर्श पाकर नरेन्द्र चौक उठा। पीछे मुड़कर देखा तो एक रूपसी बाला मुस्कुरा रही थी। मेरे साथ चलोगे क्या ? उस सुंदरी ने कहा। नरेन्द्र ने उत्तर दिया कहा जाना है।

त्रिपुर सुंदरी की सेवा में।

रात को सपने में देवी ने दर्शन देकर कहा था की तुम जिसे लाओगे उसका उद्धार निश्चित है इसके साथ ही मेरे अंदर भी त्रिपुर सुंदरी का समागम होगा।

उद्धार करने के लिए मैं ही मिला था क्या ? नरेन्द्र ने खीजते हुए कहा।

यहाँ तुम जैसा बलिष्ठ और सुंदर युवक नजर नही आ रहा।
तुम स्वयं को कृतार्थ समझो जो देवी ने तुम्हे इस कार्य के लिए चुना है।

मैं नहीं जा रहा नरेन्द्र ने कहा।

मूर्ख ! एक स्त्री से डर गया, लड़की ने अपने नेत्रों से कटाक्ष करते हुए कहा।

डरता कौन है अभी चलो।

युवती ने त्रिपुर सुंदरी के दरवाजे के पास जाकर कुछ संकेत किया। एक पुरुष ने गवाक्ष से झांककर कहा, मिला क्या ?

हाँ मिला, साथ ही लाई हु।

उस पुरुष ने आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया। युवती टेढ़ी मेढी गलियों से उस युवक को लेकर त्रिपुर सुंदरी के परिक्रमा पथ से होती हुई तहखाने में पहुँची।

सामने आसान पर एक कृष्णवर्ण का भीमकाय पुरुष बैठा गटागट मदिरा पी रहा था। उसकी दोनों आँखों से अंगारे बरस रहे थे। कुछ कापालिक मंत्रो का जाप करते हुए बडबडा रहे थे। अग्नि प्रज्वलित थी। उनके गले में हड्डियों और नरमुंडो की माला लटकी हुई थी। नर कपालो से बनाए गए भोजन पात्र सामने रखे हुए थे। जिनको देखकर लगता था भोजन कुछ देर पहले ही समाप्त हुआ था। वाम भाग में एक स्त्री और एक पुरुष मिथुन मुद्रा में थे। एक स्त्री बेहोश पड़ी थी जिसके हाथों को पीछे की तरफ बांधा गया था।

नरेन्द्र के दाखिल होते ही जो भीमकाय पुरुष आसान पर बैठा हुआ था उसने युवती से पूछा आ गई मांडवी।

हाँ, आ भी गई और इसको भी ले आई। नरेन्द्र समझ चुका था की उस तरूणी ने अपने नयन कटारो से ना केवल माताहत किया था अपितु धोखा देकर यहाँ तक ले आई थी।

तलवार की मुठ पर जैसे ही हाथ गया। मांडवी ने आकर कहा एक स्त्री से इतने भीत हो गए क्या, जो तलवार को म्यान से बाहर निकलने की भी जरूरत पड़ गई।

तलवार लेकर मांडवी ने फेंक दी।

यहाँ बैठ जाओ भीमकाय पुरुष ने इशारे से कहा। जिस जगह बैठने का इशारा किया गया वहाँ चौंसठ योगिनी का चित्र बनाया हुआ था। मारण मोहन उच्चाटन की क्रियाएं हुआ करती थी। इसे पिओ, उस पुरुष ने एक पात्र को पकड़ाते हुए कहा।

उस पात्र में सुरा थी। युवक ने सारा पात्र एक घुट में गटागट पीकर खाली कर दिया।

मांडवी जो नरेन्द्र को लाई थी वह महालय की एक नर्तकी थी। आचार्य गंग सर्वज्ञ ने सबकी अधिष्ठाती गंगा को स्वीकार किया हुआ था, गंगा के बाद यह पद ना केवल उसकी माँ के प्रभाव के कारण अपितु योग्यता के कारण भी चौला को दिया गया था।

मांडवी मन ही मन चौला और उसके भाग्य से ईर्ष्या करती थी। वह स्वयं को चौला के स्थान पर देखना चाहती थी। इसके अतरिक्त जब त्रिपुर सुंदरी का वार्षिक आसमुद्रस्नान हो तो देवी उसके अंदर आकर प्रतिष्ठित हो और वह देवी की तरह पूजी जाए। इसलिए वह बातों- बातों में चौला को लिवा लाई थी। उसका मत था वाममार्गी इन क्रियाओं से देवी प्रसन्न होकर उसे ऐसा आशीर्वाद जरूर देगी।

मांडवी चौला के वस्त्र उतारकर उसे निर्वस्त्र करने लगी। वाममार्गी क्रियाओं की यहीं विधि हुआ करती थी। चौला होश में आ चुकी थी। एक अत्यंत काले वर्ण का आदमी जिसके शरीर की आकृति किसी खंबे जैसी होगी ने आकर चौला के बालो को पकड़ लिया और उसे घसीटने लगा। एक मिनट से ज्यादा तो नरेन्द्र को यह वृतांत समझने में ही लग गई। नरेन्द्र ने आकर उस पुरुष को पकड़ लिया। वह पुरुष जिसका नाम शिवभद्र था जो शरीर के आकार से उससे दुगुना बड़ा था। दोनों के मध्य मल्ल युद्ध होने लगा। अचानक नरेन्द्र ने अपनी पूरी ताकत लगाकर उस पुरुष को उठाकर गर्दन के बल दे मारा। चीत्कार करते हुए शिवभद्र यमलोकपुरी पहुँच गया। नरेन्द्र ने अपना अंगरखा चौला के निर्वस्त्र किए हुए शरीर पर रख दिया। बहन आपको मेरी इन आँखों ने एक क्षण के लिए भी इस रूप में देखने की धृष्टता की हो तो मैं पाप का भागीदार हुआ। लड़ाई अभी समाप्त

नहीं हुई थी की इतनी देर में ही गंग सर्वज्ञ चौला को ना पाकर गंगा के साथ आ धमके।

भीमकाय पुरुष जो आसान पर बैठा हुआ था को संबोधित करते हुए सर्वज्ञ बोले विष्णुभद्र ! तुम इन सबको कब बंद करोगे ?
ये मानवता के लिए विनाशक है।

देव प्रसन्न होते है भक्ति से ना की इस तरह नरबली करने से।

नृमेध से भला क्या देव प्रसन्न होंगे।

उसमे तो अकल्याण और अमंगल ही छिपा है।

और सब सब वहाँ से चले जाते हैं।

* * *

घोघाबापा

घोघागढी रेगिस्तान के मुहाने पर एक छोटी सी रियासत थी या कह सकते है एक छोटी सी जागीरदारी थी । इस रियासत का प्रमुख था घोघाबापा । घोघाबापा अपने इक्कसठ पुत्रो और एक सौ इक्कीस पौत्रों, तथा प्रपौत्रों और बंधु बांधवो सहित निर्बाध शासन करते थे। घोघागढ़ी के दुर्ग के चारो ओर जहाँ तक निगाह जाती थी विशाल रेत के सिवाय कुछ नजर नहीं आता था। इस मरुस्थलि की घोघाबापा ने इतने सालो से रक्षा की थी। घोघाबापा की मर्जी के बिना यहाँ एक परिंदा भी पैर नही मारता था।

शाम का समय था। रेगिस्तान की तपती धूप पर सूर्य अपनी तप्त किरणों को फैला रहा था । रेतीली मिट्टी हेमकणों से आच्छादित होकर हेमांश प्रतीत हो रही थी। घोघागढ़ की अट्टालिको व बुर्जो पर सूर्य अपना प्रकाश फैला रहा था । एक संदेशवाहक अपने एक साथी के साथ घोड़ा दौड़ाते हुए वहाँ पहुंचा।

अमीर का संदेश घोघाबापा को पढ़कर सुनाया । " घोघाबापा अमीर सुल्तान आपकी बहादुरी व करगुजारी से वाकिफ है, अमीर बहादुर है व बहादुरों का सम्मान करता है। मैं आपकी उम्र का भी लिहाज करके आपको अदब से यह तोहफे भेज रहा हु । इन तोहफों को स्वीकार करके अमीर के दोस्ती के रुतबे को बढ़ाइए " । दूसरा व्यक्ति जो उसके साथ आया था ने बहुमूल्य रत्नों की थाली घोघाबापा के आगे कर दी। घोघाबापा ने थाली के लात मारते हुए कहा मेरा उत्तर तुम्हारे अमीर को यह है। इन रत्नों की कीमत मेरे सोमनाथ की भक्ति से ज्यादा नही है । यदि महमूद की सेना यहाँ से निकलती है तो उसके लिए उसे पहले घोघाबापा से टक्कर लेनी पड़ेगी। दोनों दूत वहा से चले गए।

घोघाबापा को विश्वाश था की मुल्तान में अजयपाल गजनी के सुलतान को पैर नही रखने देगा, और अमीर को दबे पांव मुल्तान से भागना पड़ेगा। लेकिन जब घोघाबापा ने सुना की अजयपाल चौहान ने अमीर की

मित्रता स्वीकार करके उसके सामने हथियार डालकर लड़ने से इंकार कर दिया है तो घोघाबापा का गुस्सा सातवें आसमान पर था। त्यौरिया चढ़ रही थी। घोघाबापा वृद्ध थे किंतु उनके चेहरे का क्रोध इस समय प्रचंड कलाग्नि के समान उद्वेलित हो उठा। हाथ मुठ पर चला गया। घोघाबापा गुस्से में वहा से सीधे सभागृह गए। अपने सभी पुत्रों, पौत्रो व सभासदो को बुलाकर अपना निर्णय सुना दिया " मैं अमीर की सेना का मुकाबला करना चाहता हु, इस समय कैलाशपति महादेव ने अभूतपूर्व वो मौका दिया है, जो शायद कई जन्मों के पुण्यकर्मो के उदय होने के बाद आता है। अब हमारे पास दो रास्ते है या तो अजयपाल चौहान और उसकी तरह महमूद की अधीनता स्वीकार कर ले, उसे रास्ता दे दे ताकि वह हमारे मंदिरों को दलित कर सके। दूसरा जब तक शरीर में साँस है तब तक शत्रु से लोहा लेकर उनके दाँत खट्टे कर देना। भले ही उनकी संख्या अधिक क्यों ना हो

घोघाबापा ने युद्ध का बिगुल बजा दिया। उनके जो सरदार यत्र-तत्र थे उनको भी बुला लिया गया। रसद की सब सामग्री घोघागढ़ी दुर्ग के अंदर इक्कठा कर ली गई। अस्त्रशालाओ में अस्त्रो का निर्माण कार्य शुरू किया गया। देखते ही देखते घोघागढ़ी ने छावनी का रूप ले लिया। मिलने वाले लोगो ने एक बार फिर से घोघाबापा को समझाने की कोशिश की ' कि युद्ध अच्छा नही है उनके सम्पूर्ण कुटुंब का विनाश हो जायेगा। अमीर की सेना के सामने उनकी गिनती कुछ भी नही है। उसके सामने जाने का मतलब है अपने ही हाथों अपना और अपने कुटुंब का विनाश '। घोघबापा मुस्कुराते रहे। विधना ने तो उन्हे स्वयं इस कार्य के लिए चुना है ताकि वह अक्षय कीर्ति का भागी होकर कुटुंब सहित कैलाश वासी हो सके।

घोघबापा ने अपने कुलगुरु नंदीदत्त को बुलाया। त्रिपुरारी का पूजन किया गया। बापा ने सारी बात नंदीदत्त को समझाते हुए कहा अगर ऐसा ना हो की हम में से कोई जीवित बचे तो तुम इन वधुओ का जौहर करा देना। ध्यान रहे शत्रु बड़े आततायी है वे केवल शरीर को ही नहीं नोचते अपितु भूखे भेड़ियों की भांति आत्म तक छिद्रित कर देते है।

नंदीदत्त ने कहा की वह भी उनके साथ इस युद्ध की पवित्र अग्नि में स्वयं को आहूत करेगा । किंतु किसी तरह उन्हें बड़ी मुश्किल से समझा बुझाकर शांत किया ।

अमीर की सेना अपने दल बल के साथ आ धमकी । आखिरी बार एक बार फिर से घोघाबापा को समझाने के लिए एक दूत फिर से भेजा गया। घोघाबापा का इस बार भी वही जवाब था । घोघाबापा अपने पुत्र- पौत्रों, सामंतों सहित आंगन में जमा हो चुके थे । ऊपर से कुलवधुए अश्रुपूरित नेत्रों से अपने पति, बेटो को स्वयं काल के मुंह में जाते देख रही थी किंतु उनमें आंसू उत्साह के थे । देव के प्रति समर्पण के थे । बाहर गजनी की सेना खड़ी इंतजार कर रही थी किंतु कोई दिखाई नही दे रहा था । तिलकार्चन के बाद पिता ने पुत्रो को, पुत्रो ने पिताओं को परस्पर गले लगाकर युद्ध के लिए एक दूसरे से विदा ली ।

अभी तक अमीर की सेना को घोघागढ किले व चारो तरफ विस्तीर्ण रेत के सिवाय कुछ नजर नही आ रहा था । किले के द्वार बंद थे । बलूची और तुर्क पठान अपनी साठ हजार नंगी तलवारों के साथ घोघाबापा का स्वागत करने को आतुर थे । अचानक किले का द्वार खुला। घोघाबापा अपने सैन्य सहित शत्रु पक्ष पर टूट पड़े । दोनों तरफ के योद्धा आपस में जूझने लगे । घोघाबापा नब्बे की वय में भी शत्रुओं से इस प्रकार जूझ रहे थे जैसे दक्ष- प्रशिक्षित शावक भेड़ियों के झुंड से निपटता है । घोघाबापा गाजर मूली की तरह शत्रु पक्ष के योद्धाओं को काट रहे थे । दोनों तरफ के योद्धा धड़- धड़ धाय एक दूसरे को काटने लगे। शाम होते- होते मैदान लाशों से अट गया । घोघाबापा अपने कुटंब सहित खेत रहे । महमूद की सेना की भी बड़ी भरी क्षति हुई थी । उसके दो हजार से अधिक योद्धा तथा काफी संख्या में ऊंट और घोड़े नष्ट हो गए थे। सर नीचे की तरफ किए महमूद शोक कर रहा था । घोघाबापा की सेना हालांकि बहुत कम थी, किंतु उनका युद्ध कौशल अपूर्व था, अद्भुत था । घोघाबापा द्वारा रास्ता दिए जाने का मतलब होता अन्य राजाओं द्वारा भी उसकी संधि को तुरंत स्वीकार कर लेना और उसकी धाक कायम रहना । किंतु आज जब लोग सुनेंगे की घोघाबापा ने

कैलाशवासी होने से पूर्व अपने से दस गुना ज्यादा बड़ी संख्या में अमीर की सेना को नष्ट किया है तो उनका यह गौरव कहा रहेगा।

एक नब्बे वर्ष का बुजुर्ग आज अमीर की मित्रता को पैरो तले रौंद गया तो उसका रुआब रुतबा क्या रहेगा ?

उधर दूसरी तरफ जब घोघाबापा और उसके कुटुंब के बलिदान की बात जब नंदीदत्त तक पहुंची तो उन्होंने ईंधन, कर्पूर, केसर, चंदन, घृत आदि से काष्ठ चित्ताए बनाई। जिन कुलवधुओ को उन्होंने सौभाग्यशाली होने का वरदान दिया था अपनी उन्ही पुत्री तुल्य बेटियो को सोलह श्रृंगार उपरांत अपने हाथों से तिलक और पूजन करके चंदन काष्ठ पर बैठ जाने को कहा। सारी क्रियाएं होने के बाद अपने हाथों से तैयार चित्ताओ को अग्नि को समर्पित किया। कोमलांगनाये जिन्होंने अपने हाथों से कभी कोई काम भी शायद न किया होगा, इस तीव्र प्रचंड अग्नि को सहन न कर सकी। एक करुण चीत्कार जिससे कान के पर्दे फट पड़ते थे की आवाज उन वधुओ की किले की दीवारों से टकराकर दुगुनी होकर कानो तक आ रही थी। नंदीदत्त इस करुण चीत्कार को न सह सके और वही बेहोश होकर गिर गए।

कुछ देर बाद यवन सैनिक अंदर आए और इस दृश्य को देखकर पैरो को दबाकर भाग खड़े हुए। चिताओं से निकलती इस आवाज और इस दृश्य को देखना हर किसी के बस का ना था।

अमीर की सेना वहाँ से आगे चल दी।

★ ★ ★

गंगा

गंगा महालय में तब आई थी जब उसके यौवन की पंखुड़ियाँ खिली ही थी। कुछ ही दिनों में उसने अपने नृत्य से गंग सर्वज्ञ को अपने वश में कर लिया था। गंग सर्वज्ञ एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे। किंतु महालय के लोग मानते थे वह गंगा से घंटो भर प्रेमालाप करते थे। गंगा की पुत्री थी चौला। कुछ लोगो का मानना ये भी था की गंगा ने गंग सर्वज्ञ को अपने रूप सौंदर्य से मतांध करके गंग सर्वज्ञ पर अधिकार पाया था और सभी नृत्यांगनाओं की अधिष्ठात्री बनी थी। वही कुछ लोग गंगा की पुत्री चौला की आकृति में गंग सर्वज्ञ के चेहरे की प्रतिकृति व अक्श देखने की असफल कुचेष्टाये करते थे।

गंगा ने अपनी सम्पूर्ण कलाओं का रसपान मानो अपनी पुत्री को करा दिया हो। चौला के सामने नृत्य में कोई ठहर नहीं सकती थी। नृत्य में तो वह पारंगत थी ही साथ में वह अपूर्व रूपसी बाला भी थी।

अब गंगा का यौवन ढल चुका था। किंतु गंग सर्वज्ञ पर उसके प्रभाव का कोई अंतर नहीं पड़ा था अगर दोनों के प्रेम प्रगल्भ की बाते या फिर ये कहे की उसके रूप सौंदर्य पर सर्वज्ञ का मुग्ध हो जाना इनको अगर सच भी मान ले तो गंगा का प्रभाव गंग सर्वज्ञ पर समाप्त हो जाना चाहिए था। किंतु इसका लेशमात्र भी फर्क नहीं पड़ा था। कहा तो यहीं जा सकता है गंगा ने जो अधिकार पाया था वह अपनी योग्यता के बल पर। ' योग्यता के अतिरिक्त जितने भी अधिकार किसी गुण विशेष के कारण मिलते है वो उस गुण विशेष के समाप्त होते ही समाप्त हो जाते हैं '। गंगा अपनी पुत्री चौला को भी वो अधिकार उसकी स्वयं की योग्यता पर ही दिलाना चाहती थी।

गंग और गंगा दोनों एक दूसरे के सम्मुख बैठे थे। वातावरण में नीरसता थी। खामोशी को चीरते हुए गंगा ने कहा आज विष्णुभद्र ने गंगा का अपहरण करने की कुचेष्टा की थी, सुना है युवराज भीमदेव आ गए और बचा लिया। हाय अभी कितने संकट और देखने है। मैने चौला के हृदय को समझा है उसमे भीमदेव के प्रेम की तापसी उसके हृदय में मौजूद है।

बात को बीच में काटते हुए सर्वज्ञ बोला अभी तो गजनी का सुल्तान चढ़ा आ रहा है पहले उससे निपट ले। बाकी सब बाद में देखा जायेगा। गंगा अपने रेशमी वस्त्रों को उठाते हुए वहाँ से चली जाती है। सर्वज्ञ वही बैठे रह जाते हैं।

* * *

मार्ग में

गजनी के अमीर की सेना बिना अवरोध के बढ़ती आ रही थी। रास्ते में पड़ने वाले राजाओं से या तो उसने मित्रता कर ली थी। शत्रुता करने वाले को बल से छल से जो बन पड़ा उसी रास्ते से निपटकर अपने मार्ग का कंटक साफ कर दिया। घोघा बापा का पुत्र सज्जन चौहान अपनी ऊंटनी पर बैठकर जा रहा था। थोड़ी दूर उसने धूल का उड़ता हुआ एक गुब्बार देखा। इतनी धूल किसी पथिको के आने से तो नही उड़ सकती। हो ना हो अमीर की सेना घोघागढ़ी के कठिन मुहाने को पार करके आ गई है। क्या घोघाबापा ने अमीर की मित्रता स्वीकार कर ली ? नही नही ! घोघाबापा अपना सर कटा सकता है परंतु वह किसी की अधीनता स्वीकार नही कर सकता। चौहान वंश का वह कुल शिरोमणी पुरुष है। उसने जब नब्बे वर्ष की वय तक अपने आप आपको उसी प्रकार स्वतंत्र रखा है जिस प्रकार स्वयं को दंडक, परणपत आदि वनो में रहने वाला सिंहराज।

तो क्या घोघाबापा बलिदान हुआ, नही नही इतना बड़ा कुल एकसाथ कैसे बलिदान हो सकता है वो भी जब सब एक से बढ़कर एक महारथी हो।

क्या कारण हो सकता है की गजनी का अमीर घोघागढ़ी के मुहाने को पार करके आ गया है।

सज्जन चौहान अपने मन में तर्क कर ही था की उसे दूर से आती हुई सेना दिखी।

सज्जन अपने मन में तर्क करने लगा की किस तरीके से उन्हें भ्रमित किया जाए।

बात की बात में सेना आगे आ चुकी थी।

सेना के अग्र भाग पर सांढनियो पर पानी के बड़े- बड़े मशक लादे गए थे। गधों पर रसद लादा गया था। आगे- आगे तुर्क सवार नंगी तलवार लिए चल रहे थे।

इतनी देर में एक तुर्क सवार। घुड़सवार अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ आया और सज्जन चौहान को खेमे में ले गया। महमूद गजनवी एक बड़े

से ऊंट पर बैठा हुआ चारो तरफ नंगी तलवार हाथ में लिए योद्धाओं से रक्षित था।

महमूद गजनवी ने एक दुभाषिए से अरबी भाषा में कुछ कहा उसके बाद संवाद आरंभ हुआ, जिसका अभिप्राय था।

तुम कहाँ से आ रहे हो ?

मैं सोमनाथ में मेला देखकर आ रहा हु।

क्या तुम सोमनाथ का रास्ता जानते हो ?

हाँ! बिल्कुल जानता हु।

क्या तुम हमे पहुंचा सकते हो ?

हाँ!

इसके बाद कुछ देर गजनी के अमीर की सेना आराम करती है। सज्जन चौहान अमीर की सेना को रणथंबी माता के मार्ग वाले रेगिस्तान से लेकर जाता है। कोई दस कोस चलने के बाद जोर से रेत का बवंडर उड़ता है। सज्जन की ऊंटनी को तो मानो सुरखाब के पंख लग गए हो वो तो दौड़ती ही जा रही थी। अमीर की सेना और सज्जन चौहान की ऊंटनी के मध्य कोई 50 गज का अंतराल हो गया था। रेत का काला धूसर उठता बवंडर यमदूतों सा प्रतीत हो रहा था। अमीर की सेना को भान हुआ, हमारे साथ धोखा हुआ है। सज्जन तो स्वयं घोघाबापा के मार्ग पर जाकर कैलाशवासी होना चाहता था किंतु वह अमीर की सेना की भी जितनी हो क्षति करने को आधृत था। आओ महमूद ! आगे बढ़ो, तुमने इसी अहंकार से भारत की धरती को क्रांत किया है आज रेगिस्तान की ये तपती रेत तुम्हे अपने आप में लील जायेगी। महमूद की सेना थर्र- थर्र कांपने लगी। देखते ही देखते एक बहुत बड़ा सेना का भाग, कई हजारों सैनिकों रेत में समा गए। सज्जन चौहान स्वयं भी रेत के धोरों में अपनी ऊंटनी सहित समा गया। अमीर अपनी बची कूची सेना लेकर पीछे की तरफ पलायन करने लगा। क्योंकि रणथम्बी माता वाले रेगिस्तान को पार करना कोई बच्चो का खेल नही था। इसको पार करने का अभिप्राय था स्वयं आगे बढ़कर मृत्यु को आलिंगन करना। अमीर महमूद ने दूसरे रास्ते से ही सोमनाथ की तरफ कूच करना उचित समझा।

★ ★ ★

युद्ध की पूर्व तैयारी

गजनी के अमीर महमूद के आक्रमण की सूचना सुनकर अनेकों सामंत, नृपती, योद्धा प्रभास पट्टन में आकर जुटने लगे। जिनमे जूनागढ़ के राजा राव नवधन जो कुमार भीमदेव के ससुर भी थे, कच्छ के सामंत कमा लाखानी, राव मकवाना, कंध कोट के गुर्जर सेनापति नरेन्द्र, भीमदेव का सेनापति बालुकराय, दामोदर मेहता, रेवाड़ी से यदुवंशी राजा लक्ष्मण, युद्ध और नीति में विशारद प्रवीण कच्छवाहा समेत सैकड़ों एक से बढ़कर एक योद्धा आकर जुटने लगे।

महालय के सभामंडप में गुप्त मंत्रणा शुरू हुई। सभा को संबोधित करते हुए गंग सर्वज्ञ ने उद्बोधन शुरू किया। गुजरात की सीमा से सुदूर गजनी का सुल्तान सोमनाथ पट्टन में भगवान शिव और पाशुपत महात्म्य का गौरव भंग करने आ रहा है। मैं जानता हु आप सब शिवभक्त ऐसा कदापि नही होने देंगे। ये तो वही बात हुई की गणों के होते हुए शिव के प्राणों की चिंता गणेश करे, जब तक शिवजी के गण है तब तक उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आप सबको देखकर आज तो यही लग रहा है की साक्षात वीरभद्र, मणिभद्र, नंदी, गुणभद्र, शैल इत्यादि शिवगण ही नररूपो में महालय की रक्षा के लिए उद्भूत हुए हो।

ढूंढाड़ के मीणाओ को भीमदेव की सेना में विशेष स्थान था या कह सकते है की नियुक्त किए जाने वाले सैनिकों में एक चौथाई हिस्सा ढूंढाड़ के मीणाओ का था। ढूंढाड़ के मीणा बरछी चलाने में बड़े महारथी थे। अंतडियो को चीरकर बरछी शरीर के आर-पार करने में उनका कोई सानी नहीं था। जिस समय गुप्त मंत्रणा महालय के सभामंडप में चल रही थी उसकी समय कुछ नए मीणा सरदार युद्ध की सुगबुगाहट सुनकर आ धमके। उनका सरदार बच्चू लाल जो नाम के विपरीत गुण वाला था। एक लम्बी कद काठी और उन्नत शरीर का मालिक था। अब युद्ध की तैयारी को अंतिम स्तर देना बाकी था। सर्वसम्मति से महाराजा भीमदेव को अधिपति घोषित किया गया गया। कोट के मुख्य द्वार की रक्षा का प्रबंध नरेन्द्र और

बालुकराय को दिया। समुद्र की तरफ खाई की रक्षा का प्रबंध कच्छ के कमा लाखाणी को दिया। गुप्तचर व सूचना विभाग कूटनीति में सिद्धहस्त होने के कारण दामोदर मेहता को दिया। आंतरिक भाग की सुरक्षा का प्रबंध राव नवधन, राव मकवाना, लक्ष्मण, इत्यादि योद्धाओं को दिया। दुर्गपाल खजानसिंह को तथा बच्चू लाल समेत उसके साथ आए मीणा सरदारों को नरेन्द्र और बालुकराय के साथ ही रक्षा प्रबंध की जिम्मेदारी दे दी। युद्ध से पूर्व महालय कोट में आवश्यक रसद सामग्रियों का प्रबंध कर लिया गया।

महालय के पट दर्शनार्थियों के लिए बंद करवाकर तय किया गया अब जब तक युद्ध समाप्त ना होकर गजनी का महमूद लौट ना जाए तब तक पौरजन ज्योतिर्लिंग के दर्शनलाभ ना उठा सकेंगे। त्रिपुर सुंदरी के मंदिर में होने वाली वाममार्गीय क्रियाओं को भी बंद करवाकर मंदिर के पट बंद कर दिए गए। विंष्णुभद्र, राशिभद्र इत्यादि अघोर तांत्रिको ने विरोध किया किंतु मौके की नजाकत को देखते हुए सबको समझा दिया गया।

महालय कोट में शस्त्र शालाओ में लुहारों की धौकनिया चल उठी। घन पर पटापट चोट पड़कर लोहा विभिन्न शस्त्रों का रूप लेने लगा। बकलर, भाला, नराच, कटार, बरछी, तीर, तलवार बनने लगे।

समस्त सैनिकों को संगठित किया गया। जीर्ण शीर्ण हथियारों के स्थान पर नव आयुध लाए गए। अतिशीघ्र नवयुवको को अधिक से अधिक प्रेरित करके राष्ट्र व धर्म रक्षा के लिए सेना में समिल्लित होने का आह्वान किया गया। सैनिकों में उत्साह वर्धन के लिए उनकी परेड कराई गई। जिन सैनिकों के कवच या ढाल विछिन्न थे उनको बदला गया। कई दिनों के आराम से सैनिकों में आलस्य भाव उत्पन्न हो गया था इसलिए उनको अल्प प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के बाद सैनिकों में एक नव उत्साह था। अपनी-अपनी तलवारों, बरछियो से म्लेच्छों का सफाया करने को तैयार थे।

★ ★ ★

अघोर तांत्रिक क्रियाएं

महालय में दर्शनार्थियों के लिए ज्योतिर्लिंग के मंदिर पट बंद कर दिए गए। केवल गंग सर्वज्ञ को अधिकार था की वह नित्यप्रति ज्योतिर्लिंग को सप्त नदियों के जल से अभिसिक्त करे।

भारतीय सनातन संस्कृति में देव स्नान का बड़ा महत्व है जिसमे सात नदियों के जल से देवप्रतिमा को स्नान करवाया जाता था।

'गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।

त्रिपुर सुंदरी के पट बंद हो जाने से लकुलीशो में कुछ अघोर तांत्रिक थे उन्हे बड़ी पीड़ा हुई। सर्वप्रथम तो उन्होंने मंदिर के पट बंद होने का विरोध किया। किंतु जब उसकी दाल नही गली तो एक नया ही नाटक महालय परिसर में शुरू हुआ। विष्णुभद्र एक सहस्त्र लकड़ी की धूणियाँ बनाकर अपने 40-50 चेलो के साथ अग्नि जलाकर धूनी प्रज्वलित कर अग्नि स्नान करने लगा। लोगो में कौतूहल हुआ। धीरे- धीरे यह बात आग की तरह प्रभास पट्टन समेत समूचे प्रदेश में फैल गई। सहस्त्र धुनियो में अग्नि स्नान तो केवल दिखावा था इसके पीछे बड़ा षड्यंत्र शामिल था। महालय के पट बंद होने से पहले गंग सर्वज्ञ ने लकुलिशो से हटकर अघोर क्रियाएं करने वालो को युद्ध की विभीषिका के कारण खंभात जाने के लिए कहा था। विष्णुभद्र अपने साथियों सहित किसी भी तरह महालय परिसर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं था। लोगो के हुजूम के हुजूम प्रभास पट्टन उमड़ने लगे किंतु नगर के अंदर किसी को प्रवेश नही दिया गया। महमूद गजनवी जिन नगरों को अपने पैरो तले रौंदता आ रहा था उसके लूटे पिटे नागरिक जिनके घर बार जला दिए गए थे शरणार्थी बनकर हजारों की संख्या में प्रभास पट्टन उमड़ने लगे। कूटनीतिज्ञ दामोदर मेहता की मंत्रणा से तय हुआ

ये दारागारपुत्राप्तान प्राणन वितमिमम परम्।
हित्वा मान शरणम याता: कथा तानास्त्यक्तुमुत्सहे।।

भगवान श्रीकृष्ण जिस प्रकार समस्त मनुष्यो को अपनी शरण में लेकर भयमुक्त करते है उसी प्रकार राजा का भी कर्तव्य व दायित्व है की वह अपनी प्रजा तथा अन्य देशों की प्रजा जो उसकी शरण में आई है उन्हे शरण देकर अभय प्रदान करे। किंतु सोमनाथ पट्टन पर गजनी के दैत्य का संकट लहरा रहा था। इसलिए महालय में नृत्य करने वाली 600 नर्तकियों, वेदों में निष्णात 2000 ब्राह्मणों को उनके परिवार सहित तथा नगर के संभ्रांत / कुलीन परिवार की वधुओ, नवबालाओ, रोगियों, वृद्धों, बालको तथा शरणागत अन्य मनुष्यो को सोमनाथ पट्टन से बाहर सुरक्षित स्थान पर खंभात भेज दिया गया। क्योंकि जल से घिरा होने के कारण यह स्थान सुरक्षित था। विष्णुभद्र को हटाने की तमाम कोशिशें की गई किंतु वह टस का मस नही हुआ। दिन में वे अपने सब साथियों के साथ धूनी जलाकर तप्त होते व अग्नि स्नान करते। शाम होते होते भस्म को अपने विशालकाय शरीर पर रमाकर नर कंकालों की माला पहनते तथा खोपड़ियो में मदिरा व कच्चा मांस खाते। प्रारंभ में ये लकुलिश थे इसलिए उन्हें महालय में शरण व लकुलीश मत में दीक्षा मिली थी। किंतु धीरे- धीरे विष्णुभद्र व सिद्धेश्वर ने स्वयं को अलग थलग करते हुए वाममार्गी क्रियाओं व अघोर क्रियाओं से अपना संबंध स्थापित कर लिया और महालय परिसर छोड़ने से इंकार करके त्रिपुर सुंदरी के मंदिर को अपना केन्द्र बनाया। शिव, भगीरथ इत्यादि गंग सर्वज्ञ के अंतरंग शिष्य भी मौका पाकर महालय के अधिष्ठाता पद पर आसीन होना चाहते थे। शिव यद्यपि स्पष्ट प्रवृति का व्यक्ति था उसके मन मस्तिष्क में चलने वाले विचारो की छाप उसके ललाट पर देखी जा सकती थी किंतु भगीरथ अपने मन के भावों को किसी के सामने प्रकट नही होने देना चाहता था। महालय के लोग तथा समस्त सामंत, सेनापति, राजा इत्यादि बाहर से आ रहे गजनी के दैत्य को लेकर सतर्क थे किंतु यह भीतर ही भीतर घात चल रहा था।

★ ★ ★

युद्ध से पूर्व

गजनी का अमीर देलवाड़ा को रौंदता हुआ प्रभास पट्टन की सीमा में आ धंसा। रात्रि अभी कुछ बाकी थी। तारे हल्के- हल्के टिमटिमा रहे थे। चन्द्रमा की रोशनी मद्धिम पड़ गई थी। नरेन्द्र और भीमदेव अपने हाथों में तलवार लेकर इधर- उधर घूम रहे थे। मशाल जलने से चारो ओर उनका पीला प्रकाश सूर्य की सी मौजूदगी का आभास करवा रहा था। छावनी में एक भी सैनिक सोया हुआ नही था। निद्रा सबकी आंखों से ओझल हो चुकी थी। कमा लाखाणी, राव नवधन, लक्ष्मण यादव, बच्चू लाल समेत अन्य सामंत और सरदार आपस में परिचर्चा कर रहे थे। कमा लाखाणी बात को शुरू करते हुए बोला सुना है अमीर की सेना में 50000 बलूची तुर्क तलवारबाज है और हमारी सेना में इनकी संख्या 8000-10000 है। खबर ये भी आई है उनके पास द्रुतगति से दौड़ने वाली सांढनिया भी है जो हवा में बाते करती है। महमूद गजनवी के पास भी एक ऐसी शमशीर (तलवार) है जिसका वार हवा में भी करो तो भी खाली नहीं जाता। मूछों पर ताव रखकर यदुवंशी सरदार लक्ष्मण खड़ा हुआ, ये सब अफवाहें है और अफवाहें रहेगी। सुनी हुई बाते दशांश भी सच नही होती है। और हम यहाँ इक्कठा इसलिए नहीं हुए की गजनी के महमूद की बड़ाई सुन ले और डरकर आत्मसमर्पण कर दे। जब तक हमारे रक्त का अंतिम कतरा हमारे शरीर में और तलवार हमारे हाथ में रहेगी तब तक गजनी के दैत्य के साथ उसका खुदा भी होगा तो सोमनाथ पट्टन को आक्रांत नहीं कर सकेगा। मंत्रणा सभा में तब तक सेनापति नरेन्द्र और महाराजा भीमदेव भी आ चुके थे। " अच्छा होता मैं उस दिन महालय परिसर में गजनी के म्लेच्छ बादशाह महमूद को अपने इन्ही दो हाथों से यमपुरी पहुंचाकर धर्मरक्षको और निर्दोष प्रजा को सदा सर्वदा के लिए इस दैत्य से अभय कर देता। किंतु गंग सर्वज्ञ के कारण मुझे उस हाथ में आए हुए दैत्य को छोड़ना पड़ा। टिमटिमाते तारे एक-एक करके लुप्त हो गए। चन्द्रदेव सूर्य की किरणों के उदय होने के साथ अनंत गगन में लुप्त हो गया।

आखिरी पैग़ाम

ऊषाकाल की पहली किरण महालय के शिखर पर टकराकर ऐसे चमकी मानो जिस प्रकार स्वर्ण खान से निकलने वाली किरणे हो । मंदिर का शिखर जगमगा रहा था । कोने कोने पर तलवारबाज सैनिक पहरा दे रहे थे । प्रभास पट्टन के कोट के बाहर अमीर की सेना दूर तक इस प्रकार फैली हुई थी मानो चींटियों का विशाल जाल हो । अमीर का एक दूत घोड़ा दौड़ाता हुआ दुर्ग के द्वार तक आया । द्वारपाल ने रोककर दुर्गपति खजानसिंह के आने तक इंतजार करने के लिए कहा । दुर्गपति खजानसिंह शस्त्रों से सज्जित होकर, छाती पर विशाल कवच, हाथों में लौहजड़ित भुजबंद, शिर पर बचाव के लिए मेमरद तथा हाथों में ढाल लिए पहुंचा । वेशभूषा से प्रतीत होता था युद्ध किसी भी क्षण हो सकता है। खजानसिंह दुर्ग के द्वार पहुंचा । पैगामी ने अंदर आना चाहा किंतु द्वार के बाहर एक खिड़की से ही अंतिम समय वार्ता करना उचित समझा । किसी भी स्थिति में दुर्ग के द्वार खोलकर पैगामी को अंदर प्रवेश करके शत्रु का समाचार कहने देना खतरे से खाली नही था ।

क्या पता शत्रु घात लगाकर दुर्ग के द्वार खुलने की प्रतीक्षा कर रहा हो ? दुर्ग द्वार और शत्रु के सैन्य दल में ज्यादा अंतर शेष नही था ।

पैगामी ने संदेश कहना शुरू किया । "गजनी के उस्तुवार अमीर महमूद के फ़ुवाद में तुम लोगो के अत्फ़ है । अमीर महमूद फालतू का खून खराबा करके तुमको अब्तर नहीं करना चाहता । चुपचाप अमीर को दुर्ग खोलकर रास्ता दे दिया जाए, अमीर तुमसे वायदा करता है की बिना क्षति के अपने अहद को पूरा करके चला जायेगा । अगर दुर्ग खोलने में तुम्हारी नाकामी होती है तो इसका उत्तर आब-ए शमशीर से दिया जायेगा" । दुर्गपाल खजानसिंह ने संदेश अंदर भिजवाया । महाराज भीमदेव अपने बाणों को तरकश में भर रहे थे । आसपास सैकड़ों योद्धा हुंकार भर रहे थे । सबने मिलकर कहा की महाराज शत्रु सामने है, संकट भीषण है, माना हम

संख्या में कम है किंतु वह दैत्य सोमनाथ पट्टन को आक्रांत करके हिंदुओ की हजारों वर्षो की श्रद्धा भक्ति को खंडित करने आया है।

नरेन्द्र ने कहा ' देव तो केवल रास्ता दिखाते है, पत्थरों की मूर्तियाँ अपना रक्षण स्वयं नही करती है। वो मनुष्यो को दैवीय विधान से प्रेरणा देती है किंतु मूर्ख मनुष्य यही सोचता है ये कैसा देव है जो लूटे जाने पर भी अपना रक्षण स्वयं नहीं कर पा रहा। इसलिए वह भाग्य को ही दोष देता है अगर संसार की हर वस्तु में चमत्कार जैसी चीजे होने लग जाए तो फिर लोग दैवीय विधान पर ही आश्रित रहे'।

सबकी बातें सुनकर महाराज भीमदेव कोट पर चढ़कर बाण चलाते हैं। बाण महमूद गजनवी की पगड़ी को लगकर पगड़ी नीचे गिर जाती है। अमीर की सेना इस घटना से नि: स्तब्ध खड़ी थी। यही भीमदेव का जवाब था। अब मैत्री नही रण होगा।

भीमदेव की सेना में एक नव संचार होता है, प्रथम प्रहार महाराज भीमदेव ने किया है। शत्रु जल्द से जल्द दुम दबाकर भाग जाएगा। हर- हर महादेव के जयकारे गूंज उठते हैं।

★ ★ ★

पहले दिन का युद्ध

अंतः कोट के बाहर महमूद गजनवी की विशाल सेना खड़ी थी। जिसके साथ देने के लिए दबाव की नीति के तहत अनेकों राजा अपनी सैन्य शक्ति के साथ आए थे। अंतः कोट के अंदर दुर्ग की दीवारों पर, कंगुरो पर, बुर्ज पर खाली मैदान में अमीर से आधी सेना ही थी किंतु उसमे आत्मविश्वास था। अपने धर्म के लिए मर मिटने का एक अद्भुत संकल्प था। शत्रु की सेना दुगुनी थी किंतु इस बात से वे बेफिक्र थे, आने वाले समय में अंजाम की प्रतीक्षा किए बिना वे आज इस दैत्य को रोकने आए थे। एक दूसरे की संस्कृति, गौरव, तथा धर्म की मर्यादा को खंडित करने आया था। तथा दूसरे राष्ट्र, उसकी संस्कृति, वैभव तथा देव सोमनाथ के हजारों वर्षो की अपूर्व कीर्ति को बचाने आए थे। ' छिद्रान्वेषि मनुष्य का सबसे बड़ा दोष होता है वह दूसरो की कीर्ति को नष्ट करना चाहता है, क्योंकि अपने सामर्थ्य से जिसमे कीर्ति उपार्जित करने का साहस हो वह

छिद्रान्वेषण के दोष से सर्वथा मुक्त होता है '।

सेनापति नरेन्द्र और बालुकराय ने आकर सेना के सम्मुख एक संक्षिप्त भाषण दिया। " साथियों आज हमारे सम्मुख एक बहुत बड़ा संकट है, मूर्तिभंजक महमूद गजनवी भारत को सौलह बार अपने घोड़ों की टापो से रौंद चुका है। इस बार इसका निशाना युगों- युगों की अक्षय कीर्ति से युक्त सोमनाथ महालय है जिसका निर्माण स्वयं सोमदेव (चन्द्रमा) ने करवाया था। वह लूटपाट के इरादों के साथ यहाँ के गौरव और प्रतिष्ठा को भी भंग करने आया है। हमारे सामने केवल 2 रास्ते है पहला रास्ता है हम शत्रु के समक्ष खुद को कातर मानकर आत्मसमर्पण कर दे दूसरा रास्ता है हम शत्रु का डटकर मुकाबला करे उसको नाकों चने चबवा दे ताकि फिर कभी ऐसे किसी आक्रांता की आंखे भारत भूमि की तरफ ना उठे। हमे ये भी नहीं पता शत्रु की सेना में ठीक-ठीक कितने सैनिक है, कितने हथियार है, क्या उनकी युद्ध नीति है ? किंतु मैं सौगंधपुर्वक कहता हु महादेव स्वयं इस युद्ध में हमारा पथ प्रदर्शन करेंगे और हम या तो कैलासवासी होंगे या

फिर शत्रु को जीतकर अक्षय कीर्ति से वसुधा पर जिएंगे"। सेना में नवचेतना का संचार हुआ । रक्त धमनियों से हिलोरे मारकर भुजाओ पर छाने लगा । सैनिक उत्साह से सरोबार होने लगे । हर-हर महादेव का गगनभेदी नारा शत्रुदल के कानो को विदीर्ण करता हुआ गूंजने लगा ।

दुर्ग के बाहर अमीर अपने सैनिकों को उत्साहित करने की कोशिश करने लगा । दुर्ग के एक तरफ भगवा ध्वज तथा दूसरी तरफ हरे झंडे लहराने लगे । एक तरफ हर- हर महादेव के नारे तथा दूसरी तरफ अल्लाह ओ अकबर के नारे गूंजने लगे ।

युद्ध की घोषणा के साथ ही नगाड़े, शंख बजने लगे बाणबली महाराज भीमदेव शत्रु सैनिकों पर बाणवर्षा करने लगे । अमीर की सेना से भी बाण चलने लगे किंतु उनके बाण दुर्ग की सुदृढ़ ऊंची दीवारों तक भी न पहुंच पा रहे थे और दीवारों से टकराकर टूट टूटकर भूमि पर गिर रहे थे। बाण आकाश में इस प्रकार छा गए थे जिस प्रकार प्रातः काल आकाश में विचरने वाले पक्षिगण आकाश को व्याप्त कर लेते है ।

दुर्ग की खाई में पहले ही पानी भरवाकर पुल को ऊपर उठाया जा चुका था । शत्रु सैनिक धड़ाम धड़ाम करके पानी में एक के ऊपर एक गिरने लगे। कोई-कोई सिपाही तो इतनी दृढ़ता से ऊपर चढ़ने की कोशिश करने लगा मानो उस पर बाण की वर्षा का कोई असर नही हो रहा हो । कोट के ऊपर से सैनिक शत्रुदल के जो सिपाही खाई में उतरकर दुर्ग की दीवार पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे उनके ऊपर बड़े-बड़े पत्थर व खौलता हुआ गर्म तेल डालने लगे । अमीर के सिपाही गर्म तेल गिरने से व पत्थरों के पड़ने से घायल होकर हाहाकार करने लगे । अमीर की सेना में सन्नाटा पसरा । सूर्य नारायण की किरणे मद्धिम पड़ने लगी । पहले दिन के युद्ध समाप्ति के लिए शंख, दुंधुंभी व नगाड़े बज उठे । पहले दिन का युद्ध पूर्ण हुआ । नरेन्द्र और महाराजा भीमदेव की कूटनीति से पहले दिन का पलड़ा भारी रहा था । वीर शिरोमणी नरेन्द्र की जय ! महाराजा भीमदेव की जय ! विजयी जयनाद गूंज उठा । सैनिक, नरेन्द्र भीमदेव, कमा लाखाणी, बालुकराय, लक्ष्मण इत्यादि सब अपने-अपने शिविरों में उत्साह के साथ अगले दिन की युद्धनीति बनाने के लिए लौट जाते हैं ।

दूसरे दिन की युद्ध नीति

प्रथम दिवस के युद्ध से अमीर महमूद गजनवी की सेना तिलमिला उठी थी। म्लेच्छ सेना की हिंदू सेना से भारी क्षति हुई थी। प्रभास पट्टन दुर्ग के बाहर थोड़े अंतराल पर जगह-जगह तम्बू गाड़े जा चुके थे। तमस को बेंधकर चन्द्रमा का उजला प्रकाश वातावरण को मधुरम बना रहा था। प्रत्येक तंबू के बाहर मशाल जल चुकी थी। बावर्ची सेना के लिए खान-पान का बंदोबस्त कर रहे थे। घायल सिपाहियो के कराहने की आवाज रात्रि के समय कानों में स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थी। उपचार शिविर में घायलों का वैध हकीम इलाज कर रहे थे। अमीर महमूद और उसका सिपह सालार मलिक आयाज बैचेन होकर शिविर में इधर- उधर घूम रहे थे। आज के इस युद्ध से उन्हें अप्रत्याशित क्षति झेलनी पड़ी थी जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नही की थी। सम्पूर्ण शिविरों का निरीक्षण करने के बाद अलबरूनी, महमूद उल उत्वी समेत दरबारी विद्वान तथा महमूद गजनवी, मलिक आयाज, फतेह मोहम्मद समेत सब लोग अगले दिन कोई रणनीति बनाने लगे। "आज के युद्ध में बहुत नुक़सान हुआ है अमीर, कल मेरे ख्याल से जैसे भी बन पड़े हाथियों को आगे करके दरवाजा तुड़वा देंगे अन्यथा इसी प्रकार हमारी हानि होती रही तो गजनी वापिस लौटना तो बहुत दूर की बात है, जमीन में दफन हो इसका भी मालूमात नही होगा"। सबने मलिक आयाज की इस बात में सहमति जताई।

दूसरी तरफ दुर्ग की दीवारों पर दीपक झिलमिला रहे थे। महालय परिसर के सभामंडप में दीपधारों पर सहस्त्र दीपक प्रज्वलित थे, मानो युद्ध से उन पर कोई असर नहीं हुआ था। ज्योतिर्लिंग के गर्भगृह के पट बंद थे, सभामंडप में सभी सुभट इक्कठा हुए। मंत्रणा शुरू हुई। महाराज भीमदेव ने उठकर बोलना शुरू किया 'आज के युद्ध में हमारा पलड़ा भारी रहा है लेकिन इससे ज्यादा उत्साहित होकर शत्रु को कमजोर समझने की भूल नहीं करनी है। शत्रु प्रबल है, आत्मघाती है, मौका पाकर घात करना जानता है। गजनी से हजारों कोसों दूर वह अपने बल के सामर्थ्य पर आया है। भारत

को सोलह बार उसने अपने घोड़ों की टापो से खुद के सामर्थ्य के साथ हमारी कमजोरी से भी रौंदा है। जब उसने एक पर आक्रमण किया तो दूसरा राजा केवल तमाशबीन बनकर देखता रहा क्योंकि उनकी आपस में शत्रुता थी। वे अपने पड़ोसी को मित्र नहीं बनाएंगे बल्कि बाहर के शत्रु से लूट पिट जायेंगे। सोमनाथ पट्टन पर आक्रमण के दौरान भी यहीं हुआ है की अनेकों राजा साथ इसलिए नही देने आए क्योंकि उनकी या तो मुझसे नहीं बनती या फिर यहाँ उपस्थित अन्य किसी से। अथवा सोमनाथ पट्टन उनकी व्यक्तिगत राज्य या उसकी सीमा का अंग थोड़ी है जो उसके लिए वे प्राणोत्सर्ग करें '। महाराजा भीमदेव ने अपनी बात को लगभग खत्म किया। हम सब साथ है सबका सम्मिलित स्वर एक साथ गूंज पड़ा।

नरेन्द्र उठकर खड़ा हुआ।' महाराजा भीमदेव की बातों से मैं लगभग सहमत हूँ, किंतु कुछेक योद्धा यहाँ इसलिए भी आए है की एक दैत्य हमारी हजारों वर्षो की आस्था को रौंद कर जा रहा है। महाराज प्रवर्सन के सेनापति की हैसियत से मैं भी इस धर्मयुद्ध में प्राणों की आहुति देने आया हु। युद्ध के बाद हममें से कौन जीवित बचेगा, कौन नही, कह सकते। कौन आया ? कौन नहीं आया ? विषय अब इन सबके बारे में बात करने का नहीं है। विषय है हम जो यहाँ उपस्थित है सब मिलकर शत्रु को कैसे रोके। निःसंदेह आज हमने अच्छा पराक्रम दिखाया। किंतु कल महमूद नई रणनीति के साथ युद्ध करने की कोशिश करेगा।

मैं और बालुकराय मुख्य तोरण द्वार पर उपस्थित रहेंगे यदि शत्रु किसी तरह द्वार तोड़ने में कामयाब हो जाए तो वहाँ मुकाबला करेंगे। महाराज भीमदेव आप मीणा सरदारों और उनके सैन्य बल के साथ द्वारिका द्वार पर रहना। समुद्र वाले मार्ग को कमा लाखाणी संभालेंगे। महालय परिसर के आंतरिक भाग में नवधन, लक्ष्मण इत्यादि मोर्चा सम्हालेंगे। युद्ध के अगले दिन के पूर्व की मंत्रणा समाप्त होती है सब अपने-अपने शिविरों में चले जाते हैं।

★ ★ ★

दूसरे दिन का युद्ध

पौ फटी, भास्कर की सुनहरी किरणों से वातावरण मनोरम हो रहा था। पक्षी चहचहा रहे थे, किंतु सब कुछ वृथा था। सामने अभी विकट संकट बाकी था। रणभेरी, दुदुंभी नगाड़े बज उठे, शंख फूंका गया। किंतु ये क्या अमीर की सेना में अभी तक सन्नाटा पसरा हुआ था। पहले दिन की क्षति से आहत होकर उसके सैनिकों ने लड़ने से मना कर दिया था। उनको रह- रहकर अपने वतन की यादें आ रही थी। कल तक उनके जो साथी उनके साथ मोर्चाबंदी और युद्ध में मुस्तैद थे उनमें काफी तो यमपुरी पहुंच चुके थे, काफी घायल थे जिनकी मृत्यु पर भी कोई रोने वाला नहीं था। उनको अपने घर से निकले काफी समय हो गया था। लगातार लड़ाइयाँ लड़ने से वे ऊब गए थे।' मनुष्यो का स्वभाव ही ऐसा होता है कितना भी वीरत्व हो, कितना भी कठोर हृदय हो घर परिवार और समाज से ज्यादा दिनों दूर नहीं रह सकता '। सैनिकों में परस्पर चर्चाएं चल रही थी अमीर की बलंद- नज़री के पीछे हम अपने प्राणों का बलिदान क्यों करे ?

बात एक कान से दूसरे कान पहुंची, दूसरे से तीसरे। मलिक आयाज तक बात पहुंचते-पहुंचते अमीर महमूद के कानो तक भी पहुंची। गजब हो जायेगा, अगर सैनिक लड़े नहीं तो।

अमीर महमूद अपनी सेना के बीच आया 'अय मेरे बहादुर जवानों।

अमीर सिर्फ तुम्हारी बहादुरी की बदौलत यहाँ तक आया है, आज जब हम ख्वाब के इतने करीब है। बूतपरस्तो के जब इतने विशाल मंदिर को हम लूटकर गजनी ले जायेंगे तो इतने बेशुमार हीरे, मोती, जवाहरात हमारे हाथ लगेंगे जिसकी तुमने कल्पना भी नही की होगी। मैं तुमसे वायदा करता हु गजनी लौटकर एक एक सिपाही को मुठ्ठी भर जवाहरात मां बदौलत बख्शीश दी जाएगी। महंगे फानूस और महंगे कालीन तुम्हारे घर की शोभा बढ़ाएंगे। अब तुम गजनी लौटकर क्या अपने घर वालो को ये बताओगे की तुमने अपने अमीर को ऐसे समय में दुश्मनों के बीच अकेले छोड़ दिया। हमने बहुत सी जंग साथ मिलकर फतह की है इसको भी हम

साथ मिलकर ही फतह करेंगे । और वापिस लौटने पर गजनी में तुम्हारा इस्तकबाल बुलंद होगा । खुदा हमारे साथ है। सबके सम्मिलित स्वर एक साथ गूंज पड़े । आमीन !

महमूद गजनवी के भाषण में अपनी बिखरी सेना को संगठित करने का चातुर्य था । हरे झंडे लहराने लगे, अल्लाह हूं अकबर के नारे गूंजने लगे।

दूसरी तरफ दुर्ग के अंदर खड़ी सेना हर हर महादेव का नाद कर रही थी, वीरता और देवत्व का प्रतिक विश्वविजीयिनी भगवा पताका लहराने लगी । अमीर के सैनिक चारो तरफ फैल गए । घोड़ों और ऊंटो की पाशीब बनाकर सिपाही चारो तरफ दीवारों पर चढ़ने की कोशिशें करने लगे। ऊपर से हिंदू सैनिक खौलता तेल व पत्थर बरसा रहे थे । अमीर ने मौका देखकर चार हाथियों को समांतर दुर्ग का दरवाजा तोड़ने के लिए आगे करवा दिए । दरवाजे पर लगी कीलो से हाथी लहूलुहान होकर जख्मी हो गए और पीछे सरकने लगे । लेकिन गजनी की इस दैत्य सेना में दया का नामोनिशान भी नहीं था । महावत पैने अंकुश से हाथी पर प्रहार करने लगा।

हाथियों के पीछे और हाथी लगाकर दरवाजा तोड़ने का प्रयास किया जाने लगा ।

अंदर भनक लगते ही द्वारिका द्वार को बंद करवा दिया गया । मीणा सरदार बच्चू लाल के लड़ाकू मीणाओ की एक छोटी सैन्य टुकड़ी तथा कुछ सैनिकों को बाहर रखकर द्वारिका द्वार की सुरक्षा बढ़ा दी गई । द्वारिका द्वार सोमनाथ महालय कोट का दूसरा द्वार था । कोई भी शत्रु तोरण द्वार को विदीर्ण करके ही द्वारिका द्वार तक पहुंच सकता था ।

हाथियों के बल से तोरण द्वार का दरवाजा टूट गया । म्लेच्छ सेना अंदर घुस आई । दोनों तरफ के योद्धा एक दूसरे से भिड़ने लगे । तलवार से तलवार टकराने लगी । शस्त्रों की खनखनहाट से वातावरण गूंज गया । मीणा सैनिक आवेश में आ आकर बरछियो को शत्रु के शरीर में पार करके उनकी अंतडिया बाहर निकालने लगे । गजनी का अमीर ऊंट पर बैठा लड़ रहा था । नरेन्द्र और बालुकराय शत्रु सैनिक को गाजर मूली की तरह काटने लगे । 'कंधकोट के इस प्रबल प्रतापी सेनापति नरेन्द्र के युद्ध कौशल से

गजनी का अमीर घबरा उठा। उसने स्वयं आगे ना आकर के अपने तुर्क सैनिकों को टूट पड़ने का आदेश दिया। नरेन्द्र शत्रु सेना में इसी तरह मार काट मचाकर भय पैदा कर रहा था जिस प्रकार बकरियों और मेमनो के झुंड में सिंह। शत्रु सैनिक मधुमक्खी के छत्ते की तरह हजारों की संख्या में नरेन्द्र पर टूट पड़े। ऊपर से महाराज भीमदेव ने जब ये दृश्य देखा तो बाणों की वर्षा करने लगे '। जिस प्रकार सांयकाल में अपने घोंसले में लौटते पक्षियों से आकाशमंडल आवृत हो जाता है उसी प्रकार महाराज भीमदेव के बाण छा गए थे। शत्रु सैनिक घायल हो- होकर गिरने लगे। लेकिन ये क्या शत्रुदल चींटियों की भांति एक के एक बाद हजारों सैनिक नरेन्द्र पर टूटने लगे। बालुकराय दूसरी तरफ युद्ध करने में व्यस्त थे। नरेन्द्र के प्राण संकट में देखकर महाराज भीमदेव दुर्ग की दीवार से कूदकर युद्ध करने लगे। दोनों मिलकर शत्रु सेना में हाहाकार मचाने लगे। मालिक आयाज का तलवार का वार महाराज भीमदेव को लगा। भीमदेव के कही प्राण संकट में ना आ जाए इसलिए नरेन्द्र उनके ऊपर किसी कवच की तरह स्थित होकर शत्रु सैनिकों को काटने लगा। शत्रु सैनिक अधिक थे और हिंदू सैनिक आधे भी शेष नही रहे थे। तोरण द्वार और द्वारिका द्वार के बीच जो युद्ध हो रहा था उसमे लाशों का ढेर अटा पड़ा था। सांयकाल हुआ। शंख बज उठे आज के युद्ध की समाप्ति की घोषणा हुई। अमीर की सेना अपने- अपने शिविरों में लौट आई। घायल महाराज भीमदेव को नरेन्द्र ने तोरण द्वार के रास्ते सुरक्षित स्थान पर भिजवा दिया। और स्वयं भी अपने जख्मों की मरहम पट्टी करवाने लगा।

★ ★ ★

अंतिम दिन का युद्ध

रात्रि के सन्नाटे में सब कुछ निः स्तब्ध था। सियार और उल्लुओ की आवाजे रात्रि के काले स्याह अंधेरे से उत्पन्न डर को और भयंकर बना रही थी। महालय कोट से एक तहखाना था। जिसका रास्ता वहा से ८ कोश दूर संकटेश्वर महादेव की बावड़ी में जाकर खुलता था। विष्णुभद्र अपने एक-2 चेलों के साथ उस तहखाने में उतरा और उसका मुंह पूर्ववत की तरह करके आगे का रास्ता लिया। संकटेश्वर की बावड़ी से निकलकर उसने गजनी के अमीर के सैन्य कैंप की ठांव ली। अमीर की विश्वस्त सेनानायको और वजीरों को संकटेश्वर बावड़ी की राह से महालय के तहखाने वाला गुप्त रास्ता जो अभी तक सिर्फ भीमदेव, गंग सर्वज्ञ, गगनराशि, को ही पता था अमीर की सेना के समुख भी यह गुप्त भेद खोल दिया।

विष्णुभद्र महालय का अधिष्ठाता और सर्वज्ञ बनने के चक्कर में यहाँ तक आ पहुंचा था की अपने साथियों और अपने देश की प्रतिष्ठा के समय गद्दारी करने पर आतुर हो गया था। कही शत्रु का यह छलावा तो नही, कही भीमदेव और उसके साथी इस षड्यंत्र से हमे पाश में तो फसाना नहीं चाहता, कही इसके पीछे शत्रु की हमे पीछे से घेरकर मारने की कोई कूटनीति तो नहीं है। सैकड़ों सवाल महमूद गजनवी के खेमे में एक साथ चल पड़े। क्योंकि इससे पहले गुप्त द्वार बताने के लिए विष्णुभद्र का संदेश जरूर आया था, वह स्वयं नहीं आया था।

महमूद गजनवी ने उसकी बातों पर कुछ विश्वाश करके अपने 200-400 बलूची तुर्क तलवारबाजो के साथ एक सिपहसालार फतह खान को भेजा। सभी संकटेश्वर महादेव की बावड़ी में कूद पड़े। कीचड़ से लथपथ गुप्त सुरंग से वे महालय के तहखाने से निकले। सबसे पहले एक तुर्क तलवारबाज, तत्पश्चात अभी सैनिक निकल पड़े। अंतः कोट के सैनिक अभी तक दिनभर की थकान के मारे घोड़े बेचकर सो रहे थे। तुर्क सैनिकों ने सावधानी से अचानक द्वारका द्वार पर हमला बोल दिया। हिंदू सैनिक

अचानक हुए इस आक्रमण से सम्हल नहीं पाए और वे खेत (वीरगति को प्राप्त) रहे। तुर्क सैनिकों ने द्रुतगति से द्वारिका द्वार को खोल दिया। अमीर की सेना में संदेश पहुंचा। पौ फटने से पहले ही घात लगाकर शत्रु ने आक्रमण किया।

बाहर से आते तुमुल कोलाहल से हिंदू सैनिक उनिंदी आंखों से जागकर जो बन पड़ा हथियार लेकर मोर्चे पर आ डंटे। महाराज भीमदेव अभी तक घायल और युद्ध न लड़ने की अवस्था में थे इसलिए उन्हें सुरंग के मार्ग से देलवाड़ा भेजने का प्रबंध किया गया ताकि वे इस लड़ाई को जारी रख सके। नरेन्द्र, बालुकराय, बच्चू लाल, लक्ष्मण, राव नवधन इत्यादि योद्धा अपने- अपने हथियारों से मोर्चाबंदी करने आ पहुंचे। गजनी का दैत्य भी अपनी पूरी ताकत लगाकर आज के इस युद्ध का अंत हिंदुओ की चित्ताओ पर पैर रखकर करना चाहता था। दोनों तरफ से धांय- धाय करती तलवारों की आवाज और चीत्कार करके गिरते योद्धाओं का शोर कानो को विदीर्ण कर रहा था। अचानक एक तलवार मीणा सरदार बच्चू लाल को आकर लगी। इसके बाद एक के बाद एक तलवार उन पर टूट पड़ी। बच्चू लाल कैलाशवासी हुआ। राव नवधन, लक्ष्मण यादव दोनों दक्षिणी मोर्चे पर लड़ रहे थे और बड़ी मुस्तैदी से वे दुश्मनों का सफाया कर रहे थे। दोनों तरफ तलवारों के लगने से वे दोनों भी थोड़ी देर में ही खेत रहे। अब युद्ध का सारा दारोमदार नरेन्द्र, बालुकराय और कमा लाखणी पर आ पड़ा था। नरेन्द्र ने बालुकराय को सुरंग के रास्ते देलवाड़ा होते हुए चंद्रावती जाने को कहा ताकि वे पीछे से लौटती हुई अमीर की सेना को तहस नहस कर सके।

कमा लाखाणी ने जब देखा की अब युद्ध का अंत समय है और सामने या तो जय का मार्ग है या फिर मरण का तो मरण का रास्ता चुनकर जय का ही आलिंगन किया जाए। वह शत्रु सेना पर किसी घायल बाज की तरह टूट पड़ा। किंतु कितनी देर लड़ता थोड़ी देर लड़ने के बाद तलवारों के अनेकों घाव उसे घायल कर गए।

अब नरेन्द्र अकेला अपने 50- 100 बचे कूचे साथियों के साथ अमीर की बची हुई बीस हजार की सेना से लोहा ले रहा था। युद्ध में विजय की कोई आशा शेष ना देखकर नरेन्द्र ने घोड़े के एड देकर गजनी के अमीर का सर काटना करना चाहा। अमीर थोड़ा साइड में हट गया, सर तो नही कटा किंतु उसका बायाँ हाथ कोहनी से अलग होकर धरती पर आ गिरा। महमूद गजनवी पर हुए इस आक्रमण को देखकर उसके हजारों तुर्क सैनिक नरेन्द्र पर टूट पड़े। वह उन सबका जवाब अपनी तलवारो से देता रहा। एक के बाद एक घाव नरेन्द्र को लगते रहे किंतु उन सबकी फिक्र किए बिना वह लड़ता रहा। घंटे भर की लड़ाई के बाद सोमनाथ महालय का यह अंतिम और अप्रतिम योद्धा भी कैलाशवासी हो गया। महमूद गजनवी की सेना में अल्लाह हूं अकबर के नारे फिर से गूंजने लगे।

* * *

युद्ध के बाद

विजयी कोलाहल करती हुई अमीर की सेना मतांध होकर दुर्ग के टूटे दरवाजों को काटकर फेंकने लगी। म्लेच्छ सैनिक हिंदू सैनिकों के मृत शरीरों पर उपद्रव करने लगे। युद्ध के बाद यह वीभत्स मंजर था। महमूद गजनवी महालय के सभामंडप में अपने 50-100 तुर्कों तथा मलिक आयाज के साथ आया। जिस जगह सहस्त्रों दीपधारो में घृत से सहस्त्र दीपक प्रज्वलित हुआ करते थे उनके पास मनुष्यो का रक्त बह रहा था। जहाँ कभी 600 से ज्यादा नृत्यांगनाएं अपनी नृत्य कला का कौशल दिखाया करती थी वहा लाशों का ढेर अटा पड़ा था। जहाँ कभी निर्माल्य चढ़ता था, सप्त नदियों के जल से देव स्नान होता था उस धरती को एक म्लेच्छ ने दूषित कर दिया था। जहाँ कभी गंग सर्वज्ञ बैठकर पूरे भारत के लकुलिशों को आदेशित किया करते थे वहाँ निर्जनता का साम्राज्य हो गया था। जहाँ कभी वेदों में निष्णात ब्राह्मण शास्त्र पूजा करके मंत्रोच्चारण किया करते थे वहाँ धर्मविरोधी नारे गूंज रहे थे।

महमूद गजनवी सोमनाथ महालय के अंदर आ जाता है। सामने ज्योतिर्लिंग पर सर टिकाए गंग सर्वज्ञ शांत व गंभीर मुद्रा में बैठा हुआ था।

'अय बुजुर्ग मैं कहता हु तुम यहाँ से हट जाओ, मैं तुम्हारी उम्र और बुजुर्गी का मान करता हु, मुझे मेरा काम कर लेने दो।

महमूद गजनवी की बाते सुनने के बाद गंग सर्वज्ञ बोले महमूद तुमने हजारों-लाखों निर्दोष हिंदुओ का कत्ल किया है। मैं देवाधिदेव महादेव की सेवा में कई वर्षो से हु। इसका रक्षण करने के लिए जब इतने लोगो ने अपने प्राणों की आहुति दी है तो एक के प्राण और सही। तुम अपना काम करो ! मेरे जीते जी तुम या कोई म्लेच्छ इसे स्पर्श नहीं कर सकता। गंग सर्वज्ञ की बात सुनने के बाद महमूद गजनवी ने अपने एक हाथ से तलवार का जोरदार प्रहार गंग सर्वज्ञ पर किया उसका सर धड़ से अलग होकर ज्योतिर्लिंग के नीचे पड़ा था। महमूद गजनवी ने अपने एक हाथ से एक बड़े लौहदंड को उठाने की कोशिश की लेकिन उससे उठाया नहीं गया,

कैलाशवासी होने से पहले नरेन्द्र महमूद गजनवी को एक यादगार जख्म देकर गया था। महमूद ने अपने सिपाहियो को आदेशित किया इस इस बुत को जिसे काफिर लोग सोमनाथ कहते है तोड़ दो उसके कलश को और शिखर को ढहा दो।

ज्योतिर्लिंग को तोड़कर और मंदिर के कलश, गुम्बंदो, तथा दीवारों को तोड़कर महमूद गजनवी अतुलित धन, सम्पदा व वैभव अपने साथ गजनी ले गया।

यहाँ रह गई कुस्मृतिया जो याद दिलाती हैं किस प्रकार आततायियों ने हमारे गौरव और गरिमा को ध्वस्त किया है।

★ ★ ★